सत्यमेव जयते

रक्षा लेखापरीक्षा विभाग की हिन्दी पत्रिका

अभिलाषा

34वां अंक 2024

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

कार्यालय
महानिदेशक लेखापरीक्षा
रक्षा सेवाएं, नई दिल्ली

अभिलाषा परिवार

बैठे हुए दाएं से -

श्रीमती मनालिका बॉर्गोहाइन्, उपनिदेशक (लेखापरीक्षा), रक्षा सेवाएं, नई दिल्ली
श्रीमती प्रियंका त्यागी, उप निदेशक (मुख्यालय) लेखापरीक्षा, रक्षा सेवाएं, नई दिल्ली
श्री एस. आलोक, महानिदेशक लेखापरीक्षा, रक्षा सेवाएं, नई दिल्ली
श्रीमती मोना जैन, निदेशक (प्रतिवेदन) लेखापरीक्षा, रक्षा सेवाएं, नई दिल्ली
श्री राजीव कुमार, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी, रक्षा सेवाएं, नई दिल्ली

दूसरी पंक्ति बाएं से -

श्री शिवहरी मीना, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी, लेखापरीक्षा, रक्षा सेवाएं, नई दिल्ली
कुमारी अदिति खाण्डल, कनिष्ठ हिन्दी अनुवादक, लेखापरीक्षा, रक्षा सेवाएं, नई दिल्ली
कुमारी कंचन वर्मा, लेखापरीक्षक, लेखापरीक्षा, रक्षा सेवाएं, नई दिल्ली
सुश्री सोमवती, हिंदी अधिकारी, लेखापरीक्षा, रक्षा सेवाएं, नई दिल्ली
श्रीमती मंजू रानी, डाटा एन्ट्री ऑपरेटर, लेखापरीक्षा, रक्षा सेवाएं, नई दिल्ली

सत्यमेव जयते

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

अभिलाषा
2024

34वां अंक

कार्यालय
महानिदेशक लेखापरीक्षा
रक्षा सेवाएं, नई दिल्ली

सत्यमेव जयते

संदेश

हिंदी, जो हमारी राजभाषा है, न केवल हमारी सांस्कृतिक धरोहर को सहेजने का कार्य करती है, बल्कि हमारे विचारों और भावनाओं को व्यक्त करने का सशक्त माध्यम भी है। राजभाषा हिंदी राष्ट्रीय एकता और गरिमा को स्थापित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। हमारे कार्यालय की वार्षिक गृह पत्रिका "अभिलाषा" के 34वें अंक के सफलतापूर्वक प्रकाशन पर मुझे अत्यंत गर्व हो रहा है। "अभिलाषा" न केवल एक पत्रिका है, बल्कि यह हमारे समुदाय में हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए एक महत्वपूर्ण और प्रेरणादायक माध्यम भी है।

इस पत्रिका के माध्यम से हम न केवल अपने अनुभवों, विचारों और रचनात्मकता को साझा कर पाते हैं, बल्कि हिंदी के प्रचार-प्रसार में भी अपना योगदान दे पाते हैं। इसमें प्रकाशित लेख, कविताएं और कहानियाँ न केवल हमारे अधिकारियों और कर्मचारियों की प्रतिभा का प्रतीक हैं, बल्कि उनके समर्पण और मेहनत को भी दर्शाते हैं। यह हमें अपने ज्ञान और विचारों को साझा करने का एक अद्वितीय अवसर देती है, जिससे हम अपने पेशेवर और व्यक्तिगत जीवन में भी प्रेरणा और ऊर्जा प्राप्त कर सकते हैं। इस महत्वपूर्ण प्रयास के माध्यम से हमने न केवल अपनी सांस्कृतिक धरोहर को संरक्षित रखा है, बल्कि हमने हिंदी भाषा के प्रति अपने समर्पण को भी प्रकट किया है।

मैं सभी लेखकों और संपादकीय टीम को उनके अथक प्रयासों के लिए हार्दिक धन्यवाद देना चाहता हूँ। आप सभी ने जिस लगन और निष्ठा के साथ इस कार्य को अंजाम दिया है, वह प्रशंसनीय है। मुझे आशा है कि यह पत्रिका सभी पाठकों के लिए प्रेरणादायक सिद्ध होगी और हिंदी भाषा के प्रति हमारे प्रेम और समर्पण को और भी दृढ़ करेगी।

"अभिलाषा" के 34वें अंक के सफल प्रकाशन की आप सभी को हार्दिक शुभकामनाएं और मैं कामना करता हूँ कि भविष्य में भी आप पत्रिका के इस गौरव-पथ पर अपना योगदान देते रहेंगे।

(श्री एस. आलोक)
महानिदेशक लेखापरीक्षा
रक्षा सेवाएं, नई दिल्ली

सत्यमेव जयते

संदेश

राजभाषा हिंदी ने अपनी सीमाओं को विस्तृत करके वैश्विक स्तर पर एक अहम पहचान बनाई है जो प्रत्येक भारतीय के लिए गर्व का विषय है। मॉरीशस में स्थित विश्व हिन्दी सचिवालय हिन्दी के प्रचार-प्रसार हेतु निरंतर प्रयासरत है। हिन्दी भाषा के सरल और सुगम उपयोग के लिए नित नयी तकनीकों के अपनाए जाने से अब यह संभव है कि आधुनिक युग के आवश्यक साधन, जैसे वेब अड्रेस अथवा यू आर एल इत्यादि भी अब हिन्दी में उपलब्ध हैं। राजभाषा की उन्नति और आत्मनिर्भरता की दिशा में यह एक महत्वपूर्ण कदम है।

प्रत्येक भारतीय नागरिक का यह कर्तव्य है कि वह राजभाषा के विकास में हर संभव योगदान दे ताकि हिन्दी विश्व में सर्वोच्च स्थान पर विराजमान हो सके। इसी कड़ी में, रक्षा लेखापरीक्षा विभाग द्वारा प्रकाशित हिन्दी पत्रिका 'अभिलाषा' ने देशभर में कार्यरत विभागीय हिन्दी प्रेमियों को एक अभीष्ट मंच प्रदान किया है और हिन्दी के प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

'अभिलाषा' के 34वें अंक के सफल प्रकाशन पर सभी सुधी पाठकों, रचनाकारों व संपादक मंडल को हार्दिक शुभकामनाएं। मैं कामना करती हूँ कि 'अभिलाषा' प्रशस्ति के नूतन सोपानों पर निरंतर अग्रसर रहकर राजभाषा को सदैव गौरवान्वित करती रहे।

माँ की लोरी सी मीठी है,
ठंडक जैसे हो पुरवा,
आँगन सा जाना पहचाना,
बीते पल का गीत मधुर,
आने वाले कल की आशा,
कानों में कोयल की कुहुक सी,
न्यारी, प्यारी हिन्दी भाषा।''

शुभकामनाओं सहित।

रश्मि

(रश्मि अग्रवाल)
महानिदेशक लेखापरीक्षा,
नौसेना, नई दिल्ली

सत्यमेव जयते

संदेश

मुझे यह जानकर अपार हर्ष की अनुभूति हो रही है कि रक्षा लेखापरीक्षा विभाग की हिंदी पत्रिका 'अभिलाषा' के 34वें अंक का प्रकाशन किया जा रहा है। राजभाषा हिंदी के उत्थान को समर्पित विभागीय पत्रिका 'अभिलाषा' राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार में विगत 34 वर्षों से निरंतर अभूतपूर्व भूमिका का निर्वहन कर रही है, जो निस्संदेह ही हमारे लिए गर्व का विषय है।

भारत के संविधान द्वारा 14 सितम्बर 1949 को देवनागरी लिपि में लिखित हिंदी को राजभाषा के रूप में अंगीकार किया गया है इसलिए 14 सितम्बर को हिंदी दिवस के रूप में मनाया जाता है। समस्त शासकीय कामकाज में राजभाषा हिंदी का प्रयोग करना हम सबका संवैधानिक उत्तरदायित्व है और उसका निर्वहन करना हमारा प्रथम कर्तव्य है ।

विभागीय पत्रिकाओं के प्रकाशन से राजभाषा के रचनात्मक विकास को दिशा मिलती है एवं भाषाई प्रचार-प्रसार का फलक बढ़ता है। इनके माध्यम से राजभाषा कार्यान्वयन को तो सकारात्मकता मिलती ही है, साथ ही विभिन्न विभागों की गतिविधियों एवं क्रिया-कलापों में राजभाषा के प्रयोग का दायरा भी वृहद् हो जाता है।

पत्रिका के प्रकाशन से जुड़े सभी रचनाकारों, अधिकारियों एवं कर्मचारियों को उनके अथक प्रयास एवं उत्कृष्ट कार्य के लिए बधाई देता हूँ। मुझे पूर्ण विश्वास है कि पत्रिका का यह अंक भी राजभाषा के प्रचार-प्रसार में उल्लेखनीय रूप से सहायक सिद्ध होगा।

पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति हेतु शुभकामनाओं सहित

(शरत चतुर्वेदी)
महानिदेशक लेखापरीक्षा,
आयुध निर्माणियाँ, कोलकाता

सत्यमेव जयते

संदेश

यह हर्ष का विषय है कि रक्षा लेखापरीक्षा विभाग की हिंदी पत्रिका ‘अभिलाषा’ के 34वें अंक का प्रकाशन किया जा रहा है।

किसी भी देश की भाषा उस देश की सभ्यता और संस्कृति की वाहक होती है। इस दिशा में रक्षा लेखापरीक्षा विभाग की हिंदी पत्रिका ‘अभिलाषा’ ने अपने दायित्वों का निर्वाह सफलतापूर्वक किया है। यह पत्रिका नवोदित रचनाकरों के लिए उनकी रचनात्मक प्रतिभा को उजागर करने का मंच भी तैयार करती है। ऐसी पत्रिकाओं के नियमित प्रकाशन से ही हिंदी के प्रचार-प्रसार को बढ़ावा दिया जा सकता है।

पत्रिका के सफल संपादन एवं प्रकाशन के लिये मेरी शुभकामनाएं।

(संजीव गोयल)
महानिदेशक लेखापरीक्षा
रक्षा सेवाएं, चंण्डीगढ़।

सत्यमेव जयते

संदेश

मुझे यह जानकर अत्यंत हर्ष का अनुभव हो रहा है कि कार्यालय महानिदेशक लेखा परीक्षा, रक्षा सेवाएँ, नई दिल्ली अपनी पत्रिका अभिलाषा' के 34वें अकं को प्रकाशित करने जा रहा है। पत्रिका का निरंतर प्रकाशित होना ही कार्यालय की राजभाषा अनुप्रयोगों के प्रति प्रतिवध्दता को चिन्हित करता है। रक्षा लेखापरीक्षा से संबंधित विभिन्न कार्यालयों से प्राप्त श्रेष्ठ एवं रोचक कृतियों से सुसज्जित यह पत्रिका न केवल राजभाषा हिन्दी के प्रचार प्रसार को बढावा प्रदान करती है वल्कि यह रक्षा लेखापरीक्षा विभाग के अधिकारियों व कर्मचारियों के उत्साह में वृद्धि भी करती है जिससे अन्य अधिकारियों व कर्मचारियों को प्रेरणा मिलती है।

मैं इस पत्रिका के 34वें अंक के प्रकाशन को सफल बनाने में सहयोगी, विविध रचनाकारों तथा पत्रिका के प्रकाशन कार्य में संलग्न संपादक-मंडल को हृदय से बधाई देता हूँ, जिनके प्रयासों से इस पत्रिका का प्रकाशन कार्य निर्बाध रूप में संपन्न हो पाया है। मैं आशा करता हूँ कि हमारी इस पत्रिका को साहित्य की दृष्टि से सृजनशील एवं राजभाषा हिन्दी के उत्थान के लिए एक सर्वोत्तम साधन के रूप में प्रसारित किया जाता रहे।

हार्दिक शुभकामनाओं सहित,

(संतोष कुमार)
महानिदेशक लेखापरीक्षा
वायुसेना, नई दिल्ली।

संदेश

हिंदी पत्रिका "अभिलाषा" के 34 वें अंक के प्रकाशन के लिए बहुत - बहुत बधाईयाँ। राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार में आपके सभी सहयोगियों द्वारा हिंदी के विकास में किया गया योगदान उनके अभूतपूर्व प्रतिभा को भी उजागर करता है।

राजभाषा की उन्नति, उसकी सांस्कृतिक धरोहर और अस्मिता के लिए हिंदी पत्रिका अपना अमूल्य योगदान देती है। पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए संपादक मंडल एंव रचनाकारों को हार्दिक अभिनंदन। पत्रिका के उज्जवल भविष्य के लिए मेरी शुभकामनाएँ।

(प्रीति अब्राहम)
प्रधान निदेशक
लेखापरीक्षा रक्षा सेवाएँ, पुणे

सत्यमेव जयते

संदेश

भारत एक विशाल विविधता से परिपूर्ण देश है, जहाँ थोड़ी-थोड़ी दूरी पर भाषा का एक नया रूप देखने को मिलता है। इस अद्भुत विविधता में एकता की प्रतीक राजभाषा 'हिंदी' को अग्रसर करने वाली इस कार्यालय की वार्षिक हिंदी पत्रिका "अभिलाषा" के 34वें अंक के सफल प्रकाशन की सभी पाठकों, रचनाकारों एवं पत्रिका से जुड़े समस्त अधिकारी एवं कर्मचारियों को हार्दिक शुभकामनाएं। हमारी पत्रिका "अभिलाषा" केवल एक प्रकाशन नहीं है, बल्कि यह हमारे समर्पण और प्रयासों का एक प्रतीक है, जो हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार और उसकी समृद्धि के प्रति हमारी प्रतिबद्धता को दर्शाता है।

"अभिलाषा" पत्रिका न केवल हिंदी भाषा को प्रोत्साहित करती है, बल्कि यह हमें एक साथ जोड़ने और हमारी सांस्कृतिक पहचान को संजोने का एक महत्वपूर्ण मंच भी प्रदान करती है। इस 34वें अंक के प्रकाशन के साथ, हम नए विचारों और दृष्टिकोणों को शामिल करने की ओर भी अग्रसर हो रहे हैं।

समस्त रचनाकारों के अथक परिश्रम और पत्रिका से जुड़े सभी लोगों के योगदान की वजह से ही यह पत्रिका इतनी प्रभावशाली और प्रेरणादायक बन पाई है। मैं आशा करती हूँ कि भविष्य में भी आपकी इसी तरह की मेहनत और सहयोग "अभिलाषा" पत्रिका का यह सफर आगे बढ़ाता रहेगा और नई ऊँचाइयों को छूने में कारगर रहेगा।

इस विशेष अवसर पर, एक बार फिर सभी को हार्दिक बधाई और शुभकामनाएँ।

मोना

(मोना जैन)
निदेशक (प्रतिवेदन)
लेखापरीक्षा रक्षा सेवाएँ, नई दिल्ली

सत्यमेव जयते

संपादकीय

वार्षिक गृह पत्रिका 'अभिलाषा' का 34वां अंक आपके सामने प्रस्तुत करते हुए हमें अत्यंत खुशी हो रही है। 'अभिलाषा' की यात्रा में यह एक महत्वपूर्ण पड़ाव है, और इस अंक के माध्यम से हम हिंदी भाषा के प्रसार और संवर्धन के अपने लक्ष्य को और सशक्त बनाने का प्रयास कर रहे हैं। इस पत्रिका ने न केवल साहित्यिक योगदान को बढ़ावा दिया है, बल्कि हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार में भी अहम् भूमिका निभाई है।

हम चाहते हैं कि 'अभिलाषा' आपके विचारों का दर्पण बने, जहां आप अपनी सृजनात्मकता और विचारों को स्वतंत्रता से व्यक्त कर सकें। आपके द्वारा भेजे गए आलेख, कविताएँ और कहानियाँ इस पत्रिका की आत्मा हैं, और हम इन्हें प्रकाशित कर गर्व महसूस करते हैं।

हमें आशा है कि इस अंक की सामग्री आपके दिल को छूने और आपकी सोच को नया आयाम देने में सफल होगी। हमारे पाठक इस पत्रिका के अनिवार्य अंग हैं और उनकी सहभागिता हमारे लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। इसलिए आपकी प्रतिक्रियाएँ और सुझाव हमारे लिए अत्यंत महत्वपूर्ण हैं, इसलिए कृपया हमें अपनी राय से अवगत कराएं ताकि हम 'अभिलाषा' को और बेहतर बना सकें।

अंत में, हम 'अभिलाषा' के इस अंक को आपको समर्पण और प्रेम के साथ समर्पित करते हैं। आशा है कि यह अंक आपके लिए प्रेरणादायक और ज्ञानवर्धक सिद्ध होगा।

(राजीव कुमार)
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
रक्षा सेवाएँ, नई दिल्ली

भारत सरकार
गृह मंत्रालय
राजभाषा विभाग
सदैव ऊर्जावान (निरंतर प्रयासरत)

राजभाषा प्रतिज्ञा

भारतीय संविधान के अनुच्छेद 343 और 351 तथा राजभाषा संकल्प 1968 के आलोक में हम, केंद्र सरकार के कार्मिक यह प्रतिज्ञा करते हैं कि अपने उदाहरणमय नेतृत्व और निरंतर निगरानी से; अपनी प्रतिबद्धता और प्रयासों से; प्रशिक्षण और प्राइज़ से अपने साथियो में राजभाषा प्रेम की ज्योति जलाये रखेंगे, उन्हें प्रेरित और प्रोत्साहित करेंगे; अपने अधीनस्थ के हितों का ध्यान रखते हुए; अपने प्रबंधन को और अधिक कुशल और प्रभावशाली बनाते हुए राजभाषा - हिंदी का प्रयोग, प्रचार और प्रसार बढ़ाएंगे। हम राजभाषा के संवर्धन के प्रति सदैव ऊर्जावान और निरंतर प्रयासरत रहेंगे ।

जय राजभाषा! जय हिन्द!

अनुक्रमणिका

क्र. सं.	विषय	रचनाकार	पृष्ठ
1.	सन्देश		2-8
2.	सम्पादकीय		9
3.	राजभाषा प्रतिज्ञा		10
4.	नारीवाद: समतावादी समाज की और एक कदम	शिवहरी मीना, सहा. लेखापरीक्षा अधिकारी, रक्षा सेवाएँ, नई दिल्ली	12
5.	मेरे पापा	कंचन वर्मा, लेखापरीक्षक, रक्षा सेवाएँ, नई दिल्ली	18
6.	कैकयी, तुम क्यों बदनाम हुई	नेहा यादव, सहा. लेखापरीक्षा अधिकारी, रक्षा सेवाएँ, नई दिल्ली	19
7.	दान, सुविचार	राजकुमार, सहा. पर्यवेक्षक, रक्षा सेवाएँ, नई दिल्ली	24
8.	महाराणा प्रताप: एक अद्भुत योद्धा की कहानी	अदिति खांडल, क. अनुवादक, रक्षा सेवाएँ, नई दिल्ली	24
9.	बेटियां	मोना कुमारी, वरी. लेखापरीक्षा अधिकारी, नौसेना, नई दिल्ली	30
10.	रिश्तों का सच	रश्मि बिश्नोई, आशुलिपिक, रक्षा सेवाएँ, नई दिल्ली	31
11.	कार्य और महिला	मंजू रानी, डी.ई.ओ., रक्षा सेवाएँ, नई दिल्ली	33
12.	त्याग	सुनीता सिंह, वरी. लेखापरीक्षक, रक्षा सेवाएँ, नई दिल्ली	34
13.	वक़्त बदलता है	श्रीमाला, लेखापरीक्षक, रक्षा सेवाएँ, नई दिल्ली	36
14.	भौतिक संसार में मानसिक स्वास्थ्य का मूल्य	विशाल शर्मा, सहा. लेखापरीक्षा अधिकारी, रक्षा सेवाएँ, नई दिल्ली	37
15.	आज की नारी	शेफाली सिंह, सहा. लेखापरीक्षा अधिकारी, रक्षा सेवाएँ, नई दिल्ली	41
16.	मुक्तेश्वर: एक अविस्मरणीय यात्रा	किरनजीत कौर, वरी. लेखापरीक्षा अधिकारी, रक्षा सेवाएँ, नई दिल्ली	43
17.	मीठे अफसाने	आई.वी.एस. श्रीनिवास, सहा. लेखापरीक्षा अधिकारी, नौसेना, विशाखापट्टनम	45
18.	हिंगलिश: संवाद की सरलता या भाषा की विकृति	ज्योति तोमर, सहा. लेखापरीक्षा अधिकारी, रक्षा सेवाएँ, नई दिल्ली	46
19.	मेरे पापा गोल-मटोल	आव्या श्री पाण्डेय पुत्री आर.पी. पाण्डेय, सहा. लेखापरीक्षा अधिकारी, रक्षा सेवाएँ, पटना	47
20.	जेब	कंचन वर्मा, लेखापरीक्षक, रक्षा सेवाएँ, नई दिल्ली	48
21.	कृत्रिम बुधिमत्ता: भविष्य का मार्गदर्शन	अभिषेक कुमार मीणा, सहा. लेखापरीक्षा अधिकारी, रक्षा सेवाएँ, नई दिल्ली	50
22.	कोन जाने क्या होगा	रवि कुमार, सहा. लेखापरीक्षा अधिकारी, रक्षा सेवाएँ, कोलकाता	53
23.	ख्वाब की दुनिया	सुधा शुक्ला, सहा. लेखापरीक्षा अधिकारी, रक्षा सेवाएँ, नई दिल्ली	54
24.	भारत में गेमिंग का उदय	अभिषेक कुमार मीणा, सहा. लेखापरीक्षा अधिकारी, रक्षा सेवाएँ, नई दिल्ली	55
25.	पहली बारिश का स्वागत	आकाश अग्रवाल, सहा. लेखापरीक्षा अधिकारी, वायु सेना, नई दिल्ली	57
26.	एक बैल की प्रार्थना	राकेश श्योकंद, सहा. लेखापरीक्षा अधिकारी, रक्षा सेवाएँ, नई दिल्ली	58
27.	युद्ध व मानवता	अनुराग प्रताप सिंह, सहा. लेखापरीक्षा अधिकारी, रक्षा सेवाएँ, नई दिल्ली	62
28.	गाँव का अल्हड सा लड़का	विशाल शर्मा, सहा. लेखापरीक्षा अधिकारी, रक्षा सेवाएँ, नई दिल्ली	66
29.	होती अगर भगवान एक नारी	शिवहरी मीना, सहा. लेखापरीक्षा अधिकारी, रक्षा सेवाएँ, नई दिल्ली	67
30.	युवापन	कौशल कुमार, लेखापरीक्षक, आयुध निर्माणियाँ, कोलकता	68
31.	जिंदगी जैसी है यारों, खूबसूरत है	रवि कुमार, क. अनुवादक, आयुध निर्माणियाँ, कोलकता	69
32.	आज के समय में सोशल मीडिया	आकाश अग्रवाल, सहा. लेखापरीक्षा अधिकारी, वायु सेना, नई दिल्ली	70
33.	सावन की बरसात	गौरव सिंह, लेखापरीक्षक, रक्षा सेवाएँ, नई दिल्ली	74
34.	अदृश्य शत्रु	पूनम मुंजाल, पर्यवेक्षक, दिल्ली छावनी	75
35.	सूनी सड़कें	सत्यवीर गौरव, सहा. लेखापरीक्षा अधिकारी, मेरठ छावनी	76
36.	प्रकृति का सोंदर्य, बरसात के रंग	अभिषेक कुमार मीणा, सहा. लेखापरीक्षा अधिकारी, रक्षा सेवाएँ, नई दिल्ली	77
37.	मिट्टी हूँ मैं	राकेश श्योकंद, सहा. लेखापरीक्षा अधिकारी, रक्षा सेवाएँ, नई दिल्ली	78

नारीवाद: समतावादी समाज की ओर एक कदम

शिवहरी मीना
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा,
रक्षा सेवाएं, नई दिल्ली

कांच की छत को देखना मुश्किल है क्योंकि यह कांच से बनी है, अर्थात यह लगभग अदृश्य है। तो यह आवश्यक है कि अधिक से अधिक पक्षी इसके ऊपर उड़ें और इस पर अपनी छाप छोड़ें, क्योंकि हम तभी इसे अच्छे से देख सकते हैं।

-केटलिन मोरन, हाउ टू बी अ वुमन।

नारीवाद की परिभाषा

ऑक्सफोर्ड डिक्शनरी के अनुसार नारीवाद एक विश्वास है, जिसका लक्ष्य है कि महिलाओं को पुरुषों के समान अधिकार और अवसर मिलने चाहिए। यह परिभाषा उस मौलिक विश्वास को दर्शाती है कि महिलाओं को पुरुषों के समान अधिकार और अवसर मिलने चाहिए। जो व्यक्ति यह मानता है कि लिंग की परवाह किए बिना सभी के साथ समान व्यवहार व सभी को आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक और व्यक्तिगत रूप से समानता मिलनी चाहिए, वह एक नारीवादी है। महत्त्वपूर्ण बात यह है कि नारीवाद महिलाओं की श्रेष्ठता को बढ़ावा नहीं देता है या पुरुषों के प्रति शत्रुता को प्रोत्साहित नहीं करता है। बल्कि, नारीवाद इस विचार के खिलाफ है कि पुरुषों के पास हमेशा अधिक शक्ति और नियंत्रण होना चाहिए। इसका यह भी मानना नहीं है कि सभी पुरुष एक समान हैं या वो सभी स्वाभाविक रूप से लिंगवादी हैं। यह समाज में उन प्रणालियों और संरचनाओं की आलोचना करता है जो महिलाओं के विरूद्ध हैं। नारीवादी नहीं चाहते कि महिलाएं पुरुषों पर शासन करें या पुरुषों से श्रेष्ठ हो जाएँ। प्रसिद्ध ऑस्ट्रेलियाई नारीवादी लेखिका जीडी एंडरसन ने अपने एक निबंध में लिखा है कि "नारीवाद का मकसद महिलाओं को प्रबल बनाना नहीं है, महिलाएं पहले से ही सबल हैं, इसका मकसद उस सबलता का सही अर्थ दुनिया को समझाना है।" नारीवाद का लक्ष्य सभी महिलाओं को सशक्त बनाना और उनका उत्थान करना है। इसकी परिभाषा में महिलाओं के उत्पीड़न का सामना करने के विभिन्न तरीकों के बारे में जानकारी हासिल करना और यह जानना शामिल है कि सामाजिक अपेक्षाएँ विभिन्न वर्गों को विभिन्न तरीकों से प्रभावित करती हैं। इसमें महिलाओं के साथ नस्ल, आकार, लिंग पहचान, शारीरिक क्षमताओं के आधार पर होने वाले भेदभाव को समझना और स्वीकार करना और इन असमानताओं के प्रति सजग रहने के लिए प्रतिबद्ध होना शामिल है।

लैंगिक भूमिकाएँ

बच्चों में बहुत कम उम्र से ही लैंगिक भूमिकाएँ समाहित कर दी जाती हैं। हमने कितनी बार यह सुना है कि आप यह नहीं कर सकतीं क्योंकि आप एक महिला हैं, या आप यह नहीं कर सकते क्योंकि आप एक पुरुष हैं। कम उम्र से ही पुरुषों को यह सोचने के लिए मजबूर कर दिया जाता है कि वे महिलाओं से श्रेष्ठ हैं, कि वे कमज़ोर नहीं हैं, और कि वे अपनी भावनाओं को व्यक्त नहीं कर सकते क्योंकि केवल महिलाएं ही भावुक होती हैं। पुरुषों को रसोई में काम करने से हतोत्साहित किया जाता है, और इसे सिर्फ़ महिलाओं का कर्तव्य माना जाता है। एक घर की कल्पना कीजिए जिसमें पति व पत्नी दोनों कामकाजी हैं, ऐसी स्थिति में भी महिला ही घर के सारे काम करेगी, हालाँकि दोनों ही काम से थके हुए आते हैं, लेकिन यह काम सिर्फ़ महिला ही करती है। यदि हम पुरुषों से घर पर काम करने की अपेक्षा किए बिना महिलाओं को बाहर काम करने के लिए सशक्त बनाते हैं, तो हम उन्हें सशक्त नहीं बना रहे हैं, हम उनका शोषण कर रहे हैं। कामकाजी पुरुष जब घर आएगा तो उसे पका हुआ खाना मिलेगा जबकि कामकाजी महिला घर आकर वह खाना पकाएगी। क्यों? क्योंकि उसे बचपन से ही यही बताया गया है। यह उसकी पसंद नहीं है; उसकी पसंद उससे बहुत पहले ही बचपन में ही छीन ली गई थी। समाज ने उसके अवचेतन में यह भर दिया था कि अपने पति या परिवार की देखभाल करना एक महिला का प्राथमिक कर्तव्य है जबकि यही बात पुरुषों से नहीं कही जाती है। अगर हर महिला अपने काम (खाना बनाना, सफाई करना, बच्चों का पालन-पोषण करना, घर चलाना) का हिसाब मांगे तो यह पूरी अर्थव्यवस्था चरमरा जायेगी। यह व्यवस्था इस अवधारणा पर निर्भर है कि महिलाएं प्यार के लिए घर का काम करती हैं। लेकिन, क्या केवल एक महिला ही अपने घर से या परिवार से प्यार करती है, पुरुष नहीं? मुझे ऐसा नहीं लगता। प्यार का इससे कोई लेना-देना नहीं है। यह पीढ़ियों से चली आ रही पितृसत्ता और स्त्रीद्वेष से प्रेरित है। अगर महिला घर का कार्य करना बंद करदें तो क्या पुरुष बाहर काम कर पाएंगे? मुझे नहीं लगता। हमें यह समझने की ज़रूरत है कि खाना पकाना या घरेलू कार्य का लिंग से कोई सम्बन्ध नहीं है, यह एक जीवन कौशल है और सभी को चाहे उनका लिंग कुछ भी हो, इसे सीखना चाहिए और करना चाहिए।

महिला सशक्तिकरण की अगर बात करे तो सशक्तिकरण मूल रूप से क्या है? इसका मतलब है किसी व्यक्ति को चुनाव करने और उस चुनाव को बनाए रखने में सक्षम बनाना, जैसे वह जीना चाहती है, उसे वैसे जीने का विकल्प देना; जो कार्य वह करना चाहती है, उसे करने का विकल्प देना; जो वस्त्र वह पहनना चाहती है, उसका विकल्प देना; और जिस व्यक्ति के साथ वह रहना चाहती है, उसे उसे चुनने का विकल्प देना। संक्षेप में कहें तो अपने जीवन और अपने शरीर के संबंध में बिना किसी दबाव के खुद से निर्णय लेने की स्वतंत्रता।

नारीवाद पूरी तरह से इसी चुनाव पर आधारित है। फिल्म "दिल धड़कने दो" में राहुल बोस कहते हैं कि आजकल महिलाओं की स्थिति सुधर रही है और वे काम कर रही हैं, वे खुद कहते हैं कि उनके परिवार में पहले कोई महिला काम नहीं करती थी लेकिन अब वे अपनी पत्नी (प्रियंका चोपड़ा) को काम करने दे रहे हैं। जिस पर फरहान अख्तर जवाब देते हैं कि अगर आप उन्हें "इजाज़त" दे रहे हैं तो इसमें बदलाव कहाँ आया है। मेरी राय में, अगर आप कहते हैं कि आप किसी को कुछ करने की अनुमति दे रहे हैं, तो इसका मतलब है कि आप खुद को निर्णायक की स्थिति में रख रहे हैं। अगर वे काम करना चाहती हैं तो उन्हें करना चाहिए, यह

उनकी पसंद है। आपको उन्हें इजाज़त देने का अधिकार किसने दिया और उन्हें आपकी इजाज़त की ज़रूरत क्यूँ पड़ रही है।

पितृसत्तात्मक एवं स्त्री-द्वेषी मानसिकता

यह स्त्री-द्वेषी जीवन शैली हमारे समाज में इतनी गहराई से समाहित है कि न केवल पुरुष बल्कि कई महिलाएँ भी इस पितृसत्तात्मक मानसिकता का समर्थन करती हैं। वे अपनी बेटियों को सिखाती हैं कि हमेशा उन्हें ही समझौता करना पड़ेगा क्योंकि वे स्त्री हैं। कई मामलों में अगर पति अपनी पत्नी के साथ मार पीट भी कर रहा है, तो लड़की की माँ कहती है कि तुम एक लड़की हो, तुम्हें इतना तो सहना पड़ेगा क्योंकि इतना तो हर लड़की को शादी में सहना पड़ता है। अब इस लड़की के पास क्या विकल्प बचता है, यह सब सहने के सिवा? क्योंकि अगर किसी चमत्कार से वह अपने पति को छोड़ने का फैसला भी कर लेती है, तो भी तलाक से जुड़े सामाजिक कलंक के कारण अक्सर उसका परिवार उसे स्वीकार नहीं करता है। और एक लड़की होने के कारण उसे कभी भी वित्तीय स्वतंत्रता नहीं सिखाई गई, इसलिए वह अकेले भी नहीं रह सकती है। उसे अपने जीवनयापन के लिए अपने पति पर निर्भर रहना पड़ता है, इसलिए या तो वह ये सब चुपचाप सहन करती है या फिर अपनी जान ले लेती है। लड़की की शादी के बाद उसे अपने पिता की संपत्ति से निकाल दिया जाता है, जिस पर उसका कानूनी तौर पर अधिकार होता है। इसलिए वह एक अत्याचारपूर्ण विवाह से छुटकारा भी नहीं पा सकती है। जब कोई महिला अपने प्रति हो रहे किसी हिंसा या दुर्व्यवहार के मामले को उजागर करती है, तो उसकी ही आलोचना की जाती है। यह धारणा कि पुरुष हमेशा पुरुष ही रहेंगे, समाज के लिए बहुत हानिकारक है। यह पुरुषों को ऐसा ही व्यवहार करने की अनुमति देती है जैसा वे हमेशा से करते आए हैं।

महिलाओं को शिक्षा के लिए समान अवसर प्रदान नहीं किए जाते हैं क्योंकि रूढ़िवादी पुरुषों एवं महिलाओं का मानना है कि अगर उन्हें शिक्षा और जागरूकता मिल गई तो वे अपने रूढ़िवादी सामाजिक मानदंडों से मुक्त हो जाएँगी और अपने परिवारों को बदनाम करेंगी। उन्हें हमेशा “पराया धन” यानी एक संपत्ति की तरह माना जाता है। शादी से पहले उन्हें अपने पिता की संपत्ति और उसके बाद अपने पति की संपत्ति माना जाता है। तो क्या महिलाओं का एक महिला के रूप में अपना कोई अस्तित्व नहीं है? यही पुरुष महिलाओं को माँ, बहन और यहाँ तक कि पत्नी के रूप में पूजते हैं लेकिन कभी भी एक महिला के रूप में उसे उसका अधिकार तक नहीं देते हैं। इसलिए हमें नारीवाद की आवश्यकता है, अर्थात उसे जागरूक बनाने और यह बताने के लिए कि उसके लिए क्या अच्छा और सही है, तथा फिर बाद में उस निर्णय में उसका समर्थन करने के लिए, ताकि वह स्वतंत्र और स्वावलंबी बन सके।

एक सशक्त महिला एक विपथन?

लेखिका चिमामांडा नगोजी अदिची ने अपनी पुस्तक प्रिय इजेवले, या पंद्रह सुझाव उद्धरणों में एक नारीवादी घोषणा पत्र में लिखा है कि “हमारी दुनिया ऐसे पुरुषों और महिलाओं से भरी पड़ी है जो शक्तिशाली महिलाओं को पसंद नहीं करते। हमें शक्ति या प्रबलता को पुरुषों के साथ जोड़ने में इतना अभ्यस्त कर दिया गया है कि हम एक शक्तिशाली महिला को एक विपथन के रूप में देखते हैं। और इसलिए, हम शक्तिशाली महिलाओं

के बारे में बहुत ही असंगत सवाल करते हैं: क्या वह विनम्र है? क्या वह मुस्कुराती है? क्या वह आभारी है? क्या उसका कोई घरेलू पक्ष है? हम शक्तिशाली पुरुषों से ऐसे सवाल नहीं पूछते, जो दर्शाता है कि हमारी परेशानी प्रबलता या शक्ति से नहीं, बल्कि महिलाओं से है।"

इसका सीधा सा मतलब यह है कि समाज में एक शक्तिशाली महिला को स्थापित सामाजिक मानदंडों पर अतिक्रमण के रूप में देखा जाता है, इसलिए अक्सर किसी न किसी तरह से उसकी आलोचना की जाती है। जब कोई बच्चा पैदा होता है तो वह स्वाभाविक रूप से स्त्री-द्वेषी नहीं होता है। कुछ लोग अपने सामाजिक अनुकूलन के कारण स्त्री-द्वेषी बन जाते हैं। उन्हें बताया जाता है की महिलाएं अल्पतर हैं और कमजोर हैं। हमारा समाज हमेशा से पितृसत्तात्मक या पुरुष प्रधान रहा है। जहाँ हमेशा से पुरुष ही परिवारों, समुदायों और देशों के मुखिया रहें हैं। कभी-कभी कोई महिला इन बेड़ियों को तोड़ देती है और जब वह ऐसा करती है, तो उस पर नैतिक व्यवस्था के अनुरूप असंगत सवाल उठाये जाते हैं और उनके निजी जीवन की व्यक्तिगत पसंद के लिए उनसे सवाल किए जाते हैं। उनसे उनके पेशेवर क्षेत्रों से संबंधित सवाल नहीं पूछे जाते, बल्कि उनकी व्यक्तिगत ज़िंदगी में उनके द्वारा किए गए किसी काम के आधार पर उनकी योग्यताओं को चुनौती दी जाती है और अगर वही काम उसी पद पर बैठे किसी पुरुष द्वारा किया जाता है, तो उससे कोई सवाल नहीं पूछा जाता है। उदाहरण के लिए, कुछ साल पहले फिनलैंड की प्रधानमंत्री सना मरीन की दोस्तों के साथ पार्टी करने और नाचने जैसी सामान्य बात के लिए कड़ी आलोचना की गई थी। वह पूरी दुनिया में सबसे कम उम्र की महिला प्रधान मंत्री बनी थी। उन्होंने कोविड महामारी से निपटने और बाद में यूक्रेन पर रूसी आक्रमण के दौरान अपने देश को नाटो की सदस्यता दिलाने में बेहतरीन काम किया है। हालाँकि, जिस चीज़ के लिए उनकी कड़ी आलोचना की गई, वह थी अपने दोस्तों के साथ नाचना, गाना और पार्टी करना। ऐसा कुछ जो हर कोई अपने निजी जीवन में करता है। उनके प्रधानमंत्रित्व काल में फ़िनलैंड सबसे खुशहाल देशों में से एक था, लेकिन इससे कोई फ़र्क नहीं पड़ा। महिलाओं की ये स्थिति है; उन्हें खुद के निजी जीवन में आनंद लेने की भी अनुमति नहीं है।

"नारीवाद" शब्द को बहुत बार गलत तरीके से प्रस्तुत किया गया है और इसे व्यापक रूप से गलत समझा गया है, जिसके कारण इसे दुनिया भर में नकारात्मक रूप से देखा जाता है। जबकि यह एक बहुत ही सरल और सीधी अवधारणा है। बहुत से लोग मानते हैं कि यह आंदोलन पुरुषों के खिलाफ है, जबकि ऐसा नहीं है। इसके विपरीत, यह पुरुषों का समर्थन करता है। हालाँकि, सभी के लिए समानता प्राप्त करने के लिए, ऐसी आम गलतफहमियों का सामना करना और सभी लिंगों के व्यक्तियों को शामिल करना महत्वपूर्ण है। हमें यह समझना होगा कि महिलाओं को समानता का अधिकार मिलना चाहिए। यह एक इतनी सामान्य चीज़ है जो उन्हें एक इंसान होने के नाते मिलनी चाहिए। नारीवाद ने समाज में बड़े बदलाव लाए हैं, जिनमें से ज़्यादातर समाज की बेहतरी के लिए ही हैं। इसने महिलाओं को अपने जीवन के बारे में अलग तरह से सोचना सिखाया है। पहले, शादी ही अक्सर महिलाओं के लिए आर्थिक रूप से सुरक्षित महसूस करने का एकमात्र तरीका होता था। अब, महिलाएँ पहले से कहीं ज़्यादा स्वतंत्र व स्वावलंबी हैं। वे स्वयं काम करती हैं और अपना पैसा खुद कमाती हैं, इसलिए उन्हें स्थिरता के लिए किसी पुरुष पर निर्भर नहीं रहना पड़ता। उनके पास पहले से ज़्यादा विकल्प और अवसर हैं।

लैंगिक असमानता और ग्लोबल जेंडर गैप रिपोर्ट 2024

नारीवाद ने अब तक एक लंबा सफर तय कर लिया है और यह बहुत सफल भी रहा है, लेकिन अभी भी बहुत काम करना बाकी है। हमें अन्याय के खिलाफ़ लड़ते रहना चाहिए और यह सुनिश्चित करना चाहिए कि सभी महिलाओं को स्वतंत्र और समान रूप से जीने का अवसर एवं अधिकार मिले। लेकिन इतनी प्रगति के बावजूद भी कुछ महिलाओं को अभी भी अनुचित व्यवहार का सामना करना पड़ता है। वे अभी भी ऐसी स्थितियों में फंसी हुई हैं जहाँ उनका कोई महत्तव नहीं समझा जाता है और उन्हें अपने या अपने अधिकारों के लिए बोलने की आज़ादी नहीं है।

विश्व आर्थिक मंच द्वारा 2024 की ग्लोबल जेंडर गैप रिपोर्ट का 18वां संस्करण हाल ही में (जून 2024) जारी किया गया है। यह रिपोर्ट सालाना 146 देशों में लैंगिक समानता का मानक तय करती है। इस रिपोर्ट का स्कोर 2024 में 68.5 प्रतिशत है, जो दर्शाता है कि अभी भी विश्व में 31.5 प्रतिशत असमानता है। पिछले वर्ष की तुलना में प्रगति में केवल 0.1 प्रतिशत की वृद्धि हुई है, जो यह दर्शाता है कि प्रगति न्यूनतम रही है। सबसे ज्यादा लैंगिक असमानता राजनीतिक सशक्तिकरण में थी, जोकि लगभग 77.5 प्रतिशत है। वर्तमान दर से, वैश्विक स्तर पर पूर्ण लैंगिक समानता हासिल करने में लगभग 134 वर्ष लगेंगे। 146 देशों में भारत की वैश्विक रैंकिंग 2023 में 127वें से दो स्थान गिरकर 2024 में 129वें पर आ गई है। भारत की रैंकिंग में गिरावट का कारण शैक्षिक उपलब्धि और राजनीतिक सशक्तिकरण में कमी है। भारत ने 2024 तक लैंगिक असामनता को 64.1 प्रतिशत कम कर लिया है। विश्व आर्थिक मंच की प्रबंध निदेशक सादिया जाहिदी ने व्यवसायों और नागरिक समाज से लिंग समानता को एक आर्थिक अनिवार्यता बनाने में सहयोग करने का आग्रह किया है। इसमें महिलाओं को संसाधनों, अवसरों और निर्णय लेने वाले पदों तक मुफ्त पहुंच प्रदान करना शामिल है।

निष्कर्ष: समानता की नई सुबह का आगाज़ एवं हमारा दायित्व

नारीवाद आज के समय में बहुत महत्वपूर्ण है क्योंकि यह दर्शाता है कि समाज में पुरुषों की तुलना में महिलाओं के साथ कितना अन्याय किया जाता है। यह असमानता राजनीति से लेकर खेल, कार्यस्थलों और व्यक्तिगत जीवन तक जीवन के सभी पहलुओं में देखी जा सकती है। इसे कुछ ठोस कदम उठाकर संबोधित किया जा सकता है, जैसे, सरकारों में अधिक महिलाओं की उपस्थिति होनी चाहिए क्योंकि वे समाज के सभी वर्गों का प्रतिनिधित्व करने वाली नीतियों में विविध दृष्टिकोण ला सकती हैं। कार्यस्थल पर नेतृत्व की भूमिकाओं में अधिक महिलाओं को बढ़ावा देने से ऐसे कार्यस्थल बन सकते हैं जहाँ सभी की प्रतिभाओं को समान रूप से महत्व दिया जाता है। महिलाओं के खेलों को उतना ही बढ़ावा देना चाहिए जितना हम पुरुषों के खेलों को बढ़ावा देते हैं। जमीनी स्तर पर, हम लिंग की परवाह किए बिना शिक्षा, स्वास्थ्य, और अन्य सभी चीजों तक समान पहुँच प्रदान करके शुरुआत कर सकते हैं। हमें लड़कियों को बहुत कम उम्र से ही समान अवसर प्रदान करने होंगे । हमें बच्चों को लिंग के आधार पर भूमिकाएँ सौंपना बंद करना होगा और उनकी पसंद की स्वतंत्रता को छीनना बंद करना होगा। हमें अपनी बेटियों, बहनों को यह सिखाने की ज़रूरत है कि पारंपरिक मानदंडो से अच्छा होने की तुलना में अपने और दूसरों के लिए आवाज़ उठाना कहीं अधिक महत्वपूर्ण है।

बहुत से लोग मानते हैं कि केवल महिलाएँ ही नारीवादी हो सकती हैं, यह बिल्कुल भी सच नहीं है। महिलाओं के अधिकारों या सभी के लिए समानता के लिए लड़ने के लिए आपको महिला होने की ज़रूरत नहीं है। नारीवाद पुरुषों के लिए उतना ही महत्वपूर्ण है जितना कि महिलाओं के लिए। नारीवाद पुरुषों को खुद को व्यक्त करने, खुद की भावनाओं को व्यक्त करने की व खुद के प्रति ईमानदार रहने की स्वतंत्रता प्रदान करता है। भावनाओं को व्यक्त करना कमज़ोरी नहीं है और किसी की भावनाओं को छिपाना या दबाना ताकत का प्रतीक नहीं है। कम उम्र से ही भावनाओं को दबाना पुरुषों के हिंसक या आक्रामक होने का सबसे बड़ा कारण है। नारीवाद ऐसा होने से रोकता है। युवा पीढ़ी उत्साहपूर्वक इस आंदोलन को अपना रही है, और अधिक से अधिक पुरुष महिलाओं के संघर्ष में उनका समर्थन कर रहे हैं। जैसे पर्यावरण के लिए लड़ने के लिए आपको पेड़ होने की ज़रूरत नहीं है वैसे ही समानता में विश्वास करने के लिए आप कोई भी हो सकते हैं। नारीवादी होने का कोई सही या गलत तरीका नहीं है, और जैसा कि मैंने पहले ही कहा है कि यह महिलाओं की पसंद के बारे में है इसलिए हमें बस उनकी पसंद को सुनना है और उनका सम्मान करना है। महिलाओं के अधिकारों का मुद्दा अभी भी सतत है, लेकिन इसकी बढ़ती लोकप्रियता नारीवादी लोगों को उम्मीद देती है। पूरी तरह से निष्पक्ष दुनिया संभव नहीं है, लेकिन इसका अर्थ ये नहीं है कि हम ऐसी दुनिया के बारे में सोच भी नहीं सकते क्योंकि ऐसी दुनिया की कल्पना करना एक बहुत ही उच्च और नेक विचार है।

मेरे पापा

कंचन वर्मा
लेखापरीक्षक
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा,
रक्षा सेवाएं, नई दिल्ली

वो खास थे,
बहुत खास...।
काम बहुत होते थे उन्हें,
पर मेरे लिए वक्त निकाल लेते थे।
मैं जो नाराज हो जाऊँ,
तो मना भी लेते थे।
मैं जो वक्त माँगू,
तो इन्तजार भी कर लेते थे।
न कोई सवाल करते,
न जवाब माँगते थे।
बस मेरे फैसले का इन्तजार करते थे।
उससे पहले बिल्कुल शान्त रहते थे।
मैं जब परेशान हो जाऊँ,
तो प्यार से मुझे समझा देते थे।
मेरे सारे नखरे-प्यार से उठा लेते थे।
साथ हैं वो,
पर पास नहीं।
अब हर वक्त पास है उनकी यादें
पर अब वो साथ नहीं......।।।

(पर वो खास हैं आज भी)
(डियर पापा, आपने जब तक साथ दिया आपका उतना शुक्रिया)।

(मेरे प्यारे पापा की याद में)।

कैकेयी, तुम क्यों बदनाम हुई!

नेहा यादव
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा,
रक्षा सेवाएं, नई दिल्ली

दूरदर्शन पर 80 और 90 के दशक में कई लोकप्रिय कार्यक्रम प्रसारित हुए, जिन्हें आज भी देखने के लिए दर्शकों में उत्साह रहता है। इन्हीं में से एक लोकप्रिय कार्यक्रम था- रामानंद सागर की 'रामायण'। रविवार की सुबह जैसे ही रामायण के प्रसारण का वक्त होता, सारा काम छोड़कर पूरा परिवार टीवी के सामने होता था और जिनके घर टेलीविजन नहीं थे उन्हें पड़ोसी आवाज देकर बुलाते थे कि जल्दी आओ रामायण शुरू होने वाली है। बच्चे से लेकर बूढ़े सब एक साथ बैठ जाते और इस घंटे में जैसे पूरा शहर थम सा जाता था। या यूं कहें, बिना कहे ही उन दिनों जनता कर्फ्यू लग जाता था। इस शो में श्रीराम से लेकर माता सीता और महाबली हनुमान तक प्रत्येक किरदार ने लोगों के दिलों में गहरी छाप छोड़ी।

यह छाप इतनी गहरी थी कि वर्ष 2020 में लॉक डाउन के समय जब दूरदर्शन पर रामायण का दोबारा प्रसारण हुआ तो तीन दशक पुराना वह नजारा फिर सामने आ गया, पर इस बार अंतर यह था कि बुजुर्गो के संग उस दौर के बच्चे अब अपने बच्चों को रामायण से जुड़ी यादों को साझा कर रहे थे। शटर वाले ब्लैक एंड वाइट टीवी की जगह बड़ी स्क्रिन वाला स्मार्ट टीवी सामने था, पर रामायण देखते वक्त अहसास वही बरसों पुराना था।

इस बार रामायण देखते वक्त एक अंतर जो मैंने महसूस किया वो था रामायण के किरदारों को गहराई से समझने की अनुभूति। श्री राम, सीता, लक्ष्मण जी के किरदार तो बचपन में भी बहुत पसंद आये थे, विशेषकर भरत का किरदार मेरा हमेशा से सबसे पसंदीदा किरदार रहा है। परन्तु इस बार रामायण देखते वक्त जिस किरदार ने अपनी ओर मेरा नज़रिया बदला वह किरदार था माता कैकेयी का।

अनेक बार ऐसा होता है कि कोई व्यक्ति ऐसी गलती कर देता है कि वह जीवन भर पछताने को मजबूर हो जाता है। दशरथ की सबसे छोटी पत्नी कैकेयी ने ऐसी ही एक भूल की जब उन्होंने राजा को अपने बेटे भरत को राज्य देने के लिए विवश किया और बड़े बेटे राम को 14 वर्षों तक जंगलों में रहने के लिए निर्वासित कर दिया। इस सदमे से राजा दशरथ की मृत्यु हो गई, और भरत जो बड़े भाई राम से बहुत प्यार करते, अपनी माँ कैकेयी के इस कृत्य पर क्रोधित और बहुत नाराज हुए।

कभी कभी सोचती हूँ कि जो माता कैकेयी भरत से भी अधिक स्नेह राम से रखती थी, उन्होंने ऐसा क्यों किया होगा? "मेरे राम, मेरे राम" रटने वाली कैकेयी उसी पुत्र को वनवास भेजकर आखिर क्यों बदनाम हुई? अगर उनको राज्य की लालसा होती तो पहले राजतिलक के लिए सहमत नहीं होती। "मेरे राम राजा बनेंगे" यह सोचकर खुशी से झूमती नहीं और दासियों को खुशी से उपहार नहीं बांटती। मंथरा के द्वारा राम के राज्यभिषेक का समाचार पाते ही इन्होंने उसे अपना मूल्यवान आभूषण प्रदान किया और कहा था, ''मंथरा! तूने मुझे बड़ा ही प्रिय समाचार सुनाया है। मेरे लिए श्री राम अभिषेक के समाचार से बढ़कर दूसरा कोई प्रिय समाचार नहीं हो सकता। इसके लिए तू मुझसे जो भी माँगेगी, मैं अवश्य दूंगी।''

इसी से पता लगता है कि वह श्री राम से कितना प्रेम करती थी। उन्होंने मंथरा की विपरीत बात सुनकर उसकी जीभ तक खींचने की बात कही थी। फिर क्या यह संभव है कि एक दासी के कहने पर बरसों पुराना प्रेम घृणा में बदल गया।

रामायण में राजा दशरथ की पत्नी और भरत की माँ कैकेयी को हमेशा से ही घृणा की नज़रों से देखा गया लेकिन क्या पराक्रमी स्त्री कैकेयी वास्तव में दोषी थीं? क्या कैकेयी को रामायण की खलनायिका मान लेना सही है?

वाल्मीकि रामायण की परम्परा में लिखे गये काव्यों और नाटकों में कैकेयी को राम-वनवास के लिए दोषी ठहराया गया है। उनके लिए असहिष्णु, कलंकिनी आदि न जाने कितने सम्बोधनों का प्रयोग करके उनकी निन्दा की गयी है। इसी दिशा में उनके कलंक को दूर करने के लिए 'अध्यात्म रामायण' में सम्भवत: सर्वप्रथम सरस्वती के प्रेरणा की कल्पना की गयी है। तुलसीदास उसी आदर्श को लेकर सम्पूर्ण रामायण में उनके चरित्र को कलुषित होने से बचाने का प्रयत्न करते हैं, किन्तु फिर भी तुलसी की दृष्टि में उनका चरित्र सम्पूर्णत: धुल नहीं पाता। उनके साथ कवि की सहानुभूति कभी नहीं जुड़ पाती। अत: अयोध्यावासियों के मुँह से उनके लिए 'पापिन' 'कलंकिनी' आदि अनेक सम्बोधनों का प्रयोग करवाते हैं। तुलसी की कैकेयी अन्त तक एकान्त-नीरव, भयावह एवं ग्लानियुक्त ही बनी रहती है। कवि उन्हें पश्चात्ताप करने का अवसर भी नहीं देते।

तुलसीदास के बाद लिखे गये राम- साहित्य में कैकेयी के चरित्र-निर्माण की ओर कोई कवि सजग नहीं हो सका। आधुनिक युग में मैथिलीशरण गुप्त ने अपने 'साकेत' में जनजीवन के जागरण तथा युग-युग से पीड़ित भारतीय नारी के उत्थान की भावना से प्रेरित होकर कैकेयी के लांछित तथा निन्दित चरित्र को उज्ज्वल करने का प्रयत्न किया है। मैथिलीशरण गुप्त ने उनके निन्दित कार्य का कारण न तो दैवी प्रभाव बताया है और न मन्थरा, वरन् उन्होंने कैकेयी को सरल स्वभाव, सहज वात्सल्यमयी माता की साक्षात् प्रतिमा के रूप में चित्रित करते हुए दिखाया है। चित्रकूट की सभा में उनके व्यक्तित्व की सराहनीय विशेषताएं उजागर होती हैं और उन्हें अपने कृत्य पर पश्चात्ताप होता है और वे 'रघुकुल की अभागिन रानी' के रूप में अपना दोष स्वीकार करती हैं। वे क्षमा-याचना के ही सबल तर्कों का प्रयोग नहीं करतीं, बल्कि राम की पुन: वापसी के लिए अपने अधिकार एवं विनय के प्रयोग से भी पीछे नहीं हटतीं।

जब भरत जी राम की चरण-पादुका लेकर अयोध्या के लिये विदा होने लगे तो एकान्त में कैकेयी श्रीराम से कहती है- 'आप क्षमाशील हैं, करुणासागर हैं, मेरे अपराधों को क्षमा कर दें। मेरा हृदय अपने पाप से दुखी हो रहा है।'

तब राम कैकेयी को समझाते हुए कहते हैं- 'आपने कोई अपराध नहीं किया है। सम्पूर्ण संसार की निन्दा और अपयश लेकर भी आपने मेरे और देवताओं के कार्य को पूर्ण किया है। मैं आपसे अत्यन्त प्रसन्न हूँ।' वनवास से लौटने पर राम सबसे पहले कैकेयी के भवन में गये। पहले उन्हीं का आदर किया।

निश्चित रूप से महारानी कैकेयी की जिद ने रामायण कथा को पुष्पित-पल्लवित होने में महान योगदान दिया। यदि रावण वध का विधान निश्चित था तो ऐसे में ये उद्देश्य बिना कैकेयी की जिद के पूरा नहीं हो सकता था। इसीलिए कैकेयी इस उद्देश्य को फलित करवाने का माध्यम बनीं। उन्होंने सदा के लिये कलंक का टीका स्वीकार कर श्रीराम के काज में सहयोग दिया।

संसार में परिवार, समाज और राष्ट्र के लिए कैकेयी को हर दृष्टि से एक त्याज्य चरित्र के रूप में दर्शाया गया है। वह एक पतिहन्ता पत्नी, राम-सीता और लक्ष्मण को वन में निष्कासित कर अनेकानेक कष्ट देने वाली विमाता, निज पुत्र को उदासीन जीवन जीने के लिए अभिशप्त करने वाली माँ, उर्मिला को पतिवियोग देने और सामाजिक रूप से स्वयं के लिए वैधव्य और अपयश चुनने वाली नारी के रूप में परिभाषित की गई है।

किन्तु विचार करने पर रामकथा में कैकेयी के समान उच्च आदर्श अन्यत्र देखने को नहीं मिलता। किसी सम्मानित व्यक्ति को जीवन में यदि सबसे ज्यादा प्रिय कुछ है तो वह उसकी प्रतिष्ठा है। प्रतिष्ठा, व्यापक संदर्भ में वह स्थिति है जिसके द्वारा उसे वर्तमान में पहचान एवं सम्मान और भविष्य में याद किया जाता है। कैकेयी के दो वरदानों ने उनकी प्रतिष्ठा को सामाजिक दृष्टि से अपूरणीय क्षति पहुंचायी।

भिन्न दृष्टिकोण से विचार करने पर कैकेयी का चरित्र लोक हितकारी और रामराज्य की स्थापना की आवश्यक शर्त को पूरा करने के लिए ही है। इसके लिए उन्होंने क्या-क्या कटुवचन और लांछन नहीं झेले। किसी माँ के लिए उसके बेटे के मुख से सर्पिणी - "को तू अहसि सत्य कह मोही।" (जो अपने बच्चों को ही खा जाती है) सुनने से ज्यादा पीड़ा पहुंचाने वाला और क्या हो सकता है ? इतना ही नहीं 'साकेत' में गुप्त जी कैकेयी के मन की पीड़ा को अपनी पंक्तियों में अभिव्यक्ति देते हुए लिखते हैं -

युग-युग तक चलती रहे कठोर कहानी,
रघुकुल में थी एक अभागिन रानी।
निज जन्म-जन्म में सुने जीव यह मेरा,
धिक्कार उसे था महा-स्वार्थ ने घेरा।।

जबकि यह सर्वविदित है कि कैकेयी के लिए राम, भरत से भी अधिक प्रिय थे। कैकेयी के जीवन की महत्वपूर्ण घटनाओं पर दृष्टि डालकर देखते है -

1. कैकेयी न सिर्फ एक रानी थी, अपितु वह कुशल योद्धा भी थी। एक बार युद्ध के समय दशरथजी के रथ की कील निकल जाने पर उन्होने अपनी अंगुली से रथ को साधे रखा, जिसके लिए राजा दशरथ ने उन्हें दो वरदान माँगने का वचन दिया।

2. यह विचारणीय है कि कैकेयी ने राम के लिए चौदह वर्ष का वनवास ही क्यों माँगा? जबकि वह आजीवन या अन्य संख्या का वनवास भी माँग सकती थी। तुलसी ने रामचरितमानस में लिखा है - कैकेयी महाराज दशरथ से वरदान माँगती है -

तापस बेष बिसेषि उदासी।
चौदह बरसि रामु बनबासी।।

अर्थात्, तपस्वियों के वेष में विशेष उदासीन भाव से (राज्य और कुटुम्ब आदि की ओर से भलीभाँति उदासीन होकर विरक्त मुनियों की भाँति) राम चौदह वर्ष तक वन में निवास करें।

ज्योतिषी एवं वास्तु विशेषज्ञ पंडित हितेंद्र कुमार शर्मा बताते हैं कि श्रवण कुमार के पिता रत्नऋषि, नंदीग्राम के राजा अश्वपति के राजपुरोहित थे और कैकेयी राजा अश्वपति की पुत्री थी। रत्नऋषि ने कैकेयी को सभी शास्त्र वेद पुराण की शिक्षा दी थी। रत्नऋषि ने कैकेयी को बताया था कि दशरथ की कोई संतान राज गद्दी पर नहीं बैठ पायेगी और साथ ही ज्योतिष गणना के आधार पर यह भी बताया था कि दशरथ की मृत्यु के पश्चात यदि चौदह वर्ष के दौरान कोई पुत्र गद्दी पर बैठ भी गया तो रघुवंश का नाश हो जायेगा।

जब राम के राज तिलक करने का अवसर आया तो बुद्धिमती कैकेयी को राजपुरोहित के कथन का स्मरण हो आया और उन्होंने यह निश्चय किया कि वह अपने प्रिय पुत्र राम को रघुवंश के विनाश का कारण नहीं बनने देगी और वही हुआ। राम के वन गमन के पश्चात् भी कैकेयी भरत के लिए भी यही चाहती थी कि वह राजसिंहासन पर बैठ कर राज्य का संचालन न करे और य़ही हुआ। भरत ने राज कार्य तो संभाला लेकिन राजसिंहासन पर नहीं बैठे अपितु सिंहासन पर राम की चरण पादुका स्थापित कर राज्य का संचालन किया।

इस सन्दर्भ में एक कथा यह भी है कि कैकेयी ने राम के लिए 14 वर्ष का वनवास मांगकर यह समझाया कि व्यक्ति युवावस्था में अपनी 14 यानी पांच ज्ञानेंद्रियां, पांच कर्मेंद्रियां और मन, बुद्धि, चित्त और अहंकार को बस में रखेगा तभी अपने अंदर के घमंड और रावण को मार पाएगा।

कैकेयी जानती थी कि राम यदि अयोध्या के राजा बन जायेंगे तो रावण का वध नहीं हो सकेगा। इसके लिए राम का वन जाना आवश्यक था। कैकेयी चाहती थी कि राम केवल अयोध्या के ही सम्राट बनकर न रह जाए बल्कि वे विश्व के समस्त प्राणियों के हृदय के सम्राट बने। रामायण के बहुत सारे भक्त इसे कैकेयी की दूर दृष्टि कहते हैं। कैकेयी को इस बात के लिए कई संत सराहना भी करते हैं कि उन्होंने अपने आपको कलंकित करके राम को वनवासी बनाया। यदि राम वन नहीं जाते तो राम के यशस्वी आचरण के चरण अयोध्या से रामेश्वरम तक कैसे पहुँचते और अत्याचारी रावण का अन्याय कैसे मिटता?

रानी कैकेयी यथार्थ जानती थी। जो नारी युद्ध भूमि में अपने पति के प्राण को बचाने के लिए अपना हाथ रथ के धुरी में लगा सकती है, वह नारी कठोर और अभागन कैसे हो सकती है। जो रानी युद्ध कला में दक्ष थी, भला वह राजनैतिक परिस्थितियों में अनजान कैसे हो सकती है? कैकेयी चाहती थी कि राम का यश चौदह भुवन में हो। यह यश बिना तप किए और रावण वध के बिना संभव नहीं था।

कुछ समय पहले इसी सन्दर्भ में एक अज्ञात कवि की कविता पढ़ी थी, जो यहाँ साझा करना चाहूंगी

कैकेयी तुम क्यों बदनाम हुई?
भरत से अधिक था तुम्हें राम पर नेह,
राम रहते थे सदा तुम्हारे गेह,
सूरज चन्दा वारती थी निशदिन तुम ,
मेरे राम मेरे राम रटती थी तुम सनेह।
कैकेयी———————————-।
लालसा जो होती तुम्हें राज की,
राज तिलक पर न सहमत होती
भर नयनों में नेह,
कनक महल जो सपना तुम्हारा,
न देती राम-सिया को सनेह।
कैकेयी—————————।
राम के काज बनाने को पी गई हलाहल,
किया मन विपरीत खेल,
रावण का दहन के लिए जो तुमने किया,
और कोई नहीं कर पाता।
उपकृत हुए राम पर बोल नहीं पाए
तभी राम का तुम पर सबसे अधिक सनेह।
कैकेयी————————————।
नयनों में अश्रु भर चली गई कैकेयी
मैं ठगी सी खड़ी रही निहारती उनको।
टूटा सपना आँख खुली सोचा यह तो भ्रम
पर सोचा तो जाना मेरे मन में सदैव था यह प्रश्न।
राम नाम से पावन होता यह संसार
राम के ससंर्ग में नहीं हो सकती कैकेयी छली,
कुछ तो इसमें होगी ईश्वर की माया।
मैं क्षुद्रबुद्धि भेद न सकती उनकी माया।
शिंजनी कहे जब पारस राम का संग हो
कोई ज़हरीला हो नहीं सकता चाहे भुजंग हो।

दान

राजकुमार
सहायक पर्यवेक्षक
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा,
रक्षा सेवाएं, नई दिल्ली

अगर आपके मीठा बोलने से,
किसी का रक्त बढ़ता है,
तो ये रक्त दान है।

अगर आपके किसी की पीठ
थमथपाने से किसी की थकान
दूर होती है तो यो भी श्रम दान है।

अगर आपके खाना खाते समय
प्लेट में उतना ही लें कि अन्न
बरबाद न जाये, तो ये भी अन्नदान है।

सुविचार

बरसात का पानी सब फसलों
को एक समान मिलता है, लेकिन
फिर भी करेला कड़वा, गन्ना मीठा
और ईमली खट्टी होती है।
यह दोष पानी का नहीं है, बीज का है
वैसे ही मनुष्य सभी एक समान है
परन्तु उन पर संस्कारों का असर पड़ता है।

महाराणा प्रताप: एक अद्भुत योद्धा की कहानी

अदिति खाण्डल
कनिष्ठ अनुवादक
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा,
रक्षा सेवाएं, नई दिल्ली

भारतीय इतिहास में वीरता स्वाभिमान की अमर गाथाएँ गढ़ने वाले अनेक वीर योद्धा हुए हैं। योद्धाओं की वीरता का राजपूताने का गौरवपूर्ण इतिहास रहा है। यहाँ के रणबांकुरों ने देश, जाति, धर्म तथा स्वाधीनता की रक्षा के लिए अपने प्राणों का बलिदान देने में भी कभी संकोच नहीं किया, उनके इस त्याग पर सम्पूर्ण भारत को गर्व रहा है। वीरों की इस भूमि में छोटे-बड़े अनेक राज्य रहे, जिन्होंने भारत की स्वाधीनता के लिए संघर्ष किया। इन्हीं राज्यों में मेवाड़ का एक विशिष्ट स्थान है, जिसमें इतिहास के गौरव शिरोमणि, धरती के वीर पुत्र, मेवाड़ रतन महाराणा प्रताप का जन्म हुआ। राजस्थान अपनी आन-बान-शान और न झुकने वाले अदम्य साहस के लिए जाना जाता है। यहां की रेगिस्तानी जमीन ने बहुत से योद्धा पैदा किये हैं, जिन्हें सदियाँ बीत जाने के बाद भी प्रेरणास्त्रोत माना जाता है महाराणा प्रताप उसी पंक्ति के पहले स्तम्भ हैं, जिन्हें न केवल राजस्थान बल्कि पूरा भारत अपना गौरव मानता है। महाराणा प्रताप को स्वाभिमान, संकल्प एवं देशभक्ति का मजबूत स्तम्भ माना जाता है।

महाराणा प्रताप का राणा से 'महाराणा' तक का सफर अनेक कठिनाईयों से भरा था। अपनी वीरता एवं साहस के कारण ही प्रताप 'महाराणा' कहलाए। महाराणा प्रताप को सबसे बहादुर योद्धाओं में से एक माना जाता हैं और वो मुगलों के खिलाफ अपनी यादगार लडाइयों के लिये प्रसिद्ध थे। इन लड़ाइयों ने उन्हें जनमानस के नायक के रुप में स्थापित किया। अन्य राजपूत राजाओं के समान उन्होंने ना कभी अकबर की अधीनता स्वीकार की ना ही अकबर के किसी गुलामी के प्रस्ताव को स्वीकार किया।

महाराणा प्रताप का जन्म 9 मई, 1540 को मेवाड़ के राजा उदयसिंह प्रथम एवं उनकी रानी जयवंता बाई के ज्येष्ठ पुत्र के रूप में हुआ। प्रताप का बचपन अन्य राजकुमारों के ही समान सामान्य गुजरा। महाराणा प्रताप की माता का उनके लालन पालन में योगदान अधिक रहा, जिसका प्रभाव प्रताप के जीवन में आगे भी देखने को मिला।

महाराणा प्रताप का बचपन कुम्भलगढ़ के किले में भीलों के साथ गुजरा और इसी प्रकार सामान्य भीलों द्वारा प्रताप को 'कीका' नाम से पुकारा जाने लगा जिसका अर्थ था छोटा बच्चा। चुंकि राणा का जीवन भीलों एवं सामान्य लोगों के बीच गुजरा, जिसका उनकी सोच पर सकारात्मक प्रभाव पड़ा। भीलों की अपने कीका के

प्रति निष्ठा राणा के कठिन समय में दिखाई दी, जब राणा अपने राज्य मेवाड़ को पुन: प्राप्त करने हेतु संघर्ष कर रहे थे तब इन्हीं भीलों ने राणा का रण में सहयोग किया। महाराणा प्रताप भीलों के साथ राजा-प्रजा का नहीं बल्कि बंधुत्व का संबंध रखते थे। भीलों द्वारा किये गये सहयोग एवं वीरतापूर्ण कार्यों के सम्मान स्वरूप उन्होंने भीलों को मेवाड़ के राज चिह्न में जगह दी। राणा के मुगलों की अधीनता स्वीकार ना करने के निर्णय ने अन्य रियासतों को भी प्रभावित किया एवं अन्य छोटी-छोटी रियासतों के राजाओं ने भी राणा का साथ दिया। राणा की इसी वीरता से प्रभावित होकर पाली के सरदार भामाशाह ने राणा को अपनी स्वअर्जित संपति में से 20,000 स्वर्ण मुद्राएँ दान में दे दी ताकि उसका उपयोग महाराणा अपनी सेना संगठन में कर सकें।

चूंकि महाराणा का जन्म उदयसिंह एवं जयवंता बाई के ज्येष्ठ पुत्र के रुप में हुआ था। अत: मेवाड़ की राजगद्दी का अगला दावेदार उन्हें ही माना जाता था। परन्तु उदयसिंह ने अपनी रानी भटियानी के प्रभाव में आकर जगमाल सिंह को अपना उत्तराधिकारी घोषित कर दिया।

राणा उदयसिंह की मृत्यु 1572 गोगुन्दा में हुई। जब दिवंगत राणा उदयसिंह द्वितीय के शव को दाह संस्कार के लिये ले जाया गया तब प्रताप ने भी सिहांसन ग्रहण करने की बजाय शव के साथ जाने का फैसला किया परन्तु मेवाड़ की रीति के अनुसार सिहांसन का उत्तराधिकारी अपने पिता के दाह संस्कार में शामिल नही होता है बल्कि वह राजतिलक करवाकर अपना राजा होने का कर्तव्य पूरा करता है, अत: मेवाड़ के सामंतों ने प्रताप को दाह संस्कार में शामिल नही होने दिया।

28 फरवरी 1572 को जगमाल का राज्यभिषेक किया गया परन्तु मेवाड़ के सामंत एवं कुलीन वर्ग इससे खुश नहीं हुआ क्योंकि जगमाल मेवाड़ पर राज करने के लिए योग्य नहीं था जिसके कारण सामंतों द्वारा जगमाल को राजगद्दी त्यागने को मजबूर कर दिया गया।

1 मार्च 1572 को गोगुंदा के किले में ही महाराणा प्रताप का प्रथम बार राज्याभिषेक किया गया। अपने स्थान पर प्रताप को राजा बनते देख जगमाल सिंह नाराज हो गया एवं वह अकबर की शरण मे चला गया जहां अकबर द्वारा जगमाल को जहाजपुर की जागीरदारी प्रदान की गयी।

मेवाड़ एक समृद्ध रियासत थी साथ ही मालवा एवं दिल्ली के मध्य स्थित होने के कारण इसका सामरिक एवं व्यापारिक महत्व भी अधिक था । राजपूतों के अधिकतर राजाओं ने अकबर की अधीनता स्वीकार कर ली थी, मेवाड़ ही एक स्वतंत्र रियासत थी। उदयपुर का इस तरह स्वतंत्र रहना सम्राट की सर्वोच्चता की छवि को कहीं न कहीं धूमिल सा कर रहा था और सर्वोच्च सत्ता को चुनौती भी,जो अकबर जैसे महत्वाकांक्षी सम्राट को बिल्कुल भी पसंद नहीं थी। साथ ही यह अकबर के बादशाह बनने के सपने को असफल बनाती थी। अत: मेवाड़ को भी अपने अधीन करने के लिए अकबर द्वारा महाराणा के पास संधि प्रस्ताव भेजा गया। अकबर के इस प्रस्ताव को महाराणा ने अस्वीकार कर दिया क्योंकि महाराणा का राजपूती रक्त उन्हें किसी की भी अधीनता स्वीकार करने की अनुमति नहीं देता था। अत: अजमेर को केंद्र बनाकर अकबर द्वारा महाराणा प्रताप के विरुद्ध सैनिक अभियान शुरू कर दिया गया। राजपूतों के अधिकतर राजाओं ने अकबर की अधीनता स्वीकार कर ली थी जिसके कारण महाराणा प्रताप के पास राजपूताने के अन्य राजाओं से भी सहायता की कोई उम्मीद नहीं थी। फिर भी इस कठिन

समय में महाराणा प्रताप ने हार नहीं मानी एवं अपने ही राज्य मे सेना संगठन करना शुरु किया। अकबर द्वारा वर्षों तक महाराणा की अधीनता स्वीकार कराने हेतु अथक प्रयास किये गये। उसने महाराणा के पास चार बार शिष्टमंडल भेजा था, जिनका नेतृत्व क्रमशः 1. जलाल खां कुरची 2.टोडरमल 3. भगवंतदास 4. मानसिंह द्वारा किया गया।

अकबर का कोई भी शिष्टमंडल महाराणा प्रताप को मुगलों की अधीनता स्वीकार करने को नहीं मना पाये। महाराणा प्रताप ने जब मुगलों के साथ कोई भी संधि स्वीकार नहीं की, तो उसका परिणाम हल्दी घाटी के युद्ध के रुप में सामने आया। महाराणा के स्वाभिमान से क्रोधित होकर अकबर ने मानसिंह के नेतृत्व मे 80,000 सैनिकों की सेना मेवाड़ भेजी। 18 जून, 1576 को राजसमन्द के हल्दीघाटी नामक स्थान पर ऐतिहासिक हल्दीघाटी का प्रथम युद्ध लड़ा गया। इस युद् में एक तरफ महाराणा प्रताप की सेना थी तो दूसरी तरफ मानसिंह के नेतृत्व में बड़ी व दक्ष मुगल सेना थी। प्रताप की सेना में भीलों की संख्या अधिक थी जो राणाप्रताप को अपना पुत्र मानते थे एवं राणा के लिए वे अपने प्राण भी न्योछावर करने को तैयार थे। मानसिंह की सेना के साथ जहाँ सैन्य शक्ति अधिक थी वहीं प्रताप के पास जुझारु शक्ति का बल था। हल्दीघाटी का स्थान एक संकरा मार्ग था जो चारों तरफ से पहाड़ी क्षेत्र से घिरा था। हल्दीघाटी का मार्ग इस प्रकार संकरा था कि इस पर एक समय पर सिर्फ एक ही व्यक्ति गुजर सकता था, जिसका फायदा शुरुआत में महाराणा की सेना को मिला। अकबर की बड़ी सेना का सामना करने के लिए अद्भुत रणकौशल के धनी महाराणा प्रताप द्वारा इसी युद्ध में सर्वप्रथम छापे- मार युद्ध प्रणाली का उपयोग किया गया था।

भीषण युद्ध में दोनों तरफ के योद्धा घायल होकर जमीन पर गिरने लगे। प्रताप अपने स्वामी भक्त घोड़े चेतक पर सवार होकर शत्रु सेना में मानसिंह को खोजने लगे। महाराणा ने जब मानसिंह को हाथी पर सवार देखा तो वे चेतक पर सवार होकर बिलकुल मानसिंह के समीप पहुंच गये ,चेतक ने अपने दोनों पैर मानसिंह के हाथी की सूंड पर रख दिए और प्रताप ने अपने भाले से मानसिंह को निशाना बनाया। प्रताप के भाले से महावत मारा गया परन्तु मानसिंह बच गया। हाथी की सूंड पर तलवार के बंधे होने के कारण चेतक का पैर कट गया एवं महाराणा भी गंभीर रूप से घायल हो गए। महाराणा को घायल एवं फंसा हुआ देखकर महाराणा प्रताप के सेनापतियों में से एक झाला सरदार मन्नाजी ने प्रताप का राजचिन्ह स्वंय धारण कर लिया एवं युद्ध भूमि में कूदकर संघर्ष करने लगे। मुगल सैनिक उन्हीं को प्रताप समझ कर उनपर टूट पड़े, जिससे प्रताप को युद्ध-भूमि पर दूर जाने का अवसर मिल गया। प्रताप का पूरा शरीर घावों से लहू-लुहान हो चुका था एवं उनके पास बचने का सिर्फ एक ही तरीका था। उसके लिए उन्हें 12 मीटर के एक लंबे नाले को पार करना था। चूंकि यह कार्य असंभव प्रतीत हो रहा था, फिर भी राणा के स्वामीभक्त घोड़े चेतक ने अपनी भक्ति का प्रदर्शन करते हुए एक ही छलाँग में उस 12 मीटर के नाले को पार कर दिया। गंभीर घायल होने के कारण इसी स्थान पर चेतक की मृत्यु हो गई। इसी स्थान पर बाद में चेतक की समाधि भी बनाई गई।

इस युद्ध में चेतक के समान ही स्वामी भक्त हाथी रामप्रसाद भी शामिल हुआ, जिसे मुगल सेना द्वारा बंदी बनाकार अकबर के समक्ष प्रस्तुत किया। अकबर ने इसका नाम बदलकर पीर प्रसाद रखा। अकबर के सैनिकों ने

रामप्रसाद को खिलाने के अनेक प्रयास किये परन्तु राम प्रसाद ने 18 दिन तक कुछ भी नहीं खाया एवं अंततः उसने भूखा रहकर अपने प्राण दे दिए।

इस युद्ध के पश्चात महाराणा प्रताप पहाड़ियों में चले गए। चूंकी, मुगल सेना महाराणा प्रताप को कैद करने में असफल रही, इसलिए यह युद्ध अनिर्णायक रहा। इतिहासकारों ने इस युद्ध को अनेक नामों की संज्ञा दी जिसमें सबसे प्रमुख कर्नल जेम्स टॉड ने इसे "मेवाड़ के थर्मोपल्ली" की संज्ञा दी। (थर्मोपल्ली ग्रीक में एक जगह है जहां थर्मोपल्ली की लड़ाई स्पार्टा के राजा लियोनिडास के 300 जाबांज योद्धा जो लड़ाई में एक दम निपुण थे और पर्शिया/फारसी के राजा जेरेक्सीज की विशाल सेना के मध्य थर्मोपल्ली नामक स्थान में 480 ईसा पूर्व में लड़ी गई जिसमें स्पार्टा के 300 सैनिक पर्शिया की सेना पर भारी पड़ गए थे, किन्तु कुछ कपटी व्यक्तियों की वजह से स्पार्टा जीता हुआ युद्ध पर्शिया से हार गया)

बदायुनी ने हल्दीघाटी के युद्ध के पश्चात प्रताप के लिए लिखा कि "जब राणा कीका ने हल्दीघाटी की लड़ाई में हमारी मुगल सेना पर हमला किया तो हमने बिना पीछे मुड़कर देखे आठ मील निरन्तर भागना पड़ा क्योंकि हमें नहीं पता था कि मौत हमारा पीछा कहाँ से कर रही थी।"

यहाँ से घायल महाराणा प्रताप उदयपुर चले गए जहाँ पर उन पर मुगल सेना द्वारा 15 अक्टूबर, 1576 को फिर आक्रमण किया गया। गोगुन्दा पर मुगलों का अधिकार हो गया परन्तु फिर मेवाड़ी सेना द्वारा पुन: उन पर जीत हासिल कर ली गई।

उदयपुर को छोड़ने के बाद महाराणा प्रताप ने कुंभलगढ़ को अपनी राजधानी बनाया। वहाँ पर भी 1577 में अकबर की सेना द्वारा महाराणा पर हमला किया गया, जहाँ से बचकर प्रताप उदयपुर पहाड़ी क्षेत्र में चले गये। इस युद्ध में भी मुगल महाराणा प्रताप को पकड़ न सके। उदयपुर की पहाड़ियों में संसाधनों की कमी के कारण महाराणा प्रताप ने संघर्षपूर्ण जीवन जिया। उन्होने वहां रहकर घास की रोटी खाना स्वीकार किया परन्तु अकबर की अधीनता स्वीकार नहीं की। बार-बार अपनी जगह बदलने के कारण राणा की शक्ति क्षीण होती जा रही थी, परन्तु उनका मनोबल फिर भी ऊंचा ही रहा। राणा के इस प्रवास के दौरान ही भामाशाह नामक व्यक्ति ने महाराणा प्रताप को 20,000 स्वर्ण मुद्राए दान में दी थी। महाराणा प्रताप ने इसी पूंजी से अपनी सेना तैयार की। 1577 से 1582 तक महाराणा प्रताप जगंलों में रहे, इधर-उधर घूम कर सेना संगठित की।

जब उन्होंने सेना संगठित कर ली तो अक्टूबर 1582 में महाराणा प्रताप ने अकबर की दिवेर छावनी पर हमला बोला। इस युद्ध में महाराणा प्रताप के सेनापति उनके पुत्र अमरसिंह प्रथम थे। इसमें महाराणा विजयी हुए। यह महाराणा प्रताप की प्रथम निर्णायक जीत थी इस लिये कर्नल जेम्स टॉड ने इसे "मेवाड़ का मैराथन" की संज्ञा दी। इतिहास में इस युद्ध को "प्रताप का गौरव" भी कहा गया। दिवेर में मुगलों की हार के पश्चात अकबर निराश हो गया एवं महाराणा प्रताप को पराजित करने के लिए उसने जगन्नाथ कछवाह के नेतृत्व मे 1584 में अंतिम अभियान भेजा। हमेशा की तरह इस बार भी अकबर महाराणा को हराने में असफल रहा।

1585 में महाराणा प्रताप ने लूणा चावंडीया को पराजित करके चावण्ड बसाया एवं इसे अपनी राजधानी बनाया। महाराणा प्रताप ने माण्डलगढ़ व चितौड़गढ़ के अलावा सभी दुर्गों को वापस जीत लिया। प्रताप ने अपना सम्पूर्ण जीवन अटल दृढ़ निश्चय के साथ जिया। वे एक महाराणा के रुप में पैदा हुए एवं 29 जनवरी 1597 को स्वतंत्र महाराणा के रुप में ही मृत्यु को प्राप्त हुए। राणा प्रताप का सम्पूर्ण जीवन सतत् संघर्ष एवं कठिनाईयों से भरा रहा, परन्तु प्रताप ने हर कठिनाई का पूर्ण मजबूती एवं बहादुरी से सामना किया। उन्होनें अपने जीवन में कभी मुगलों की अधीनता स्वीकार नहीं की। अकबर के अथक प्रयासों के बावजूद भी मेवाड़ी माँ के पुत्र ने अपनी पगड़ी को मुगलों के चरणों में अर्पित नहीं किया। महाराणा प्रताप ने अपने चरित्र के बल पर मेवाड़ का इतिहास बदल दिया। जहां लगभग सम्पूर्ण राजपूताना अकबर की अधीनता स्वीकार कर चुका था, वहीं महाराणा प्रताप ने अपने लोगों के लिए स्वाधीनता की जोत को जलाए रखा। वे अपने सम्पूर्ण जीवन में संघर्ष करते रहे, पर हार नहीं मानी। उनका जीवन आगे आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रेरणा का स्रोत बना। महाराणा प्रताप जैसे प्रतापी व्यक्ति का सम्पूर्ण जीवन ही आदर्श है जो हमें बताता है कि विपरीत परिस्थितियों में भी साहस के साथ जीत हासिल की जा सकती है। इसलिए कहा गया कि

“राणा री पाग सदा ऊँची
राणा री आण अटूटी है।“

बेटियाँ

मोना कुमारी
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा
(नौसेना) नई दिल्ली

याद उनकी बहुत आती है
जिनकी गोद में पली थी ।
जिनकी ममता की छत्र छाँव में
खेली और बड़ी हुई थी ।

पर जमाने की रीत अजीब है
बेटा अपना और बेटी पराई होती है।
छोड़ कर आना पड़ता उनको
जो जान से प्यारा होता उनको ।

बेटी की व्यथा भी ऐसी है
या यूं कहूँ कि परवरिश ऐसी है।
छोड़कर अपना घर, बड़ी ही सहजता से
दूसरा घर अपना लेती है।

किसी की बहू, पत्नी और न जाने
कितने रिश्तों को निभा लेती है।
पति की शक्ति बनती है
बच्चों की सरस्वती, परिवार की लक्ष्मी होती है ।

यह जग ऋणी रहेगा
हमेशा सारी बेटियों का ।
जो जननी है, संचालक है
भगवान की इस सुंदर प्रकृति की।

रिश्तों का सच

रश्मि बिश्नोई
आशुलिपिक
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा,
रक्षा सेवाएं, नई दिल्ली

ना कोई अपना ना कोई पराया, ये रिश्तों की माया,
सच तो ये है इस जगत में, ये झूठी महामाया
ना कोई साथ आया, ना साथ कोई जाएगा।
अकेला बंदा ही इस पिंजरे से मुक्त हो जाएगा।
इस जीवन की माला में एक-एक मोती डाला
ये बेटा, बेटी, चाचा, बुआ रिश्तों का मेला लगा डाला।
मत कर अंहकार ए-प्राणी इस जगत पर
है एक भ्रम इस दुनिया का जो रिश्तों का जाल बुन डाला,
ना कोई अपना ना कोई पराया, ये रिश्तों की माया,
सच तो ये है इस जगत में, ये झूठी महामाया ।।

रिश्तों की इस दुनिया में ए-इंसान खुद को क्यों इतना उलझा डाला,
एक जमाना था, जो रिश्तों के लिए यादों में ताजमहल बना डाला।
ये कलयुग है साहब, जैसे ही यहां शमशान से निकले,
वैसे ही चार दिन में इंसान को भुला डाला।
अपना-अपना कहने वालों ने सबसे पहले खंजर घोंप डाला।।
दया करो, उपकार करो, मत करो किसी पर विश्वास
किया विश्वास जिसने उसके साथ हुआ विश्वासघात।
रिश्तों की यह झूठी दुनिया , ना कोई अपना ना कोई पराया,
सच तो ये है इस जगत में, ये झूठी महामाया ।।

चार दिन की जिंदगी, छोड़ो मोह-माया
कर लो सैर-सपाटा अपने मन का, यहां से कुछ नहीं जाना।
जगाओ खुद को, बनो खुद का सहारा
दूसरों से उम्मीदें, बनाएगी तुमको बेसहारा।

रिश्तों के इस अंबार में बनाओ खुद को गुलशन का सितारा
हो जाओ रू-ब-रू इन रिश्तों के जंजाल से
जैसे बदलते हैं मौसम, यहाँ बदलते हैं इंसान
कौन कब बदल जाए, नहीं किसी को अनुमान
रिश्तों के इस चक्रव्यूह को ए-मानव तू पहचान।
रिश्तों की इस झूठी दुनिया में, ना कोई अपना ना कोई पराया,
सच तो ये है इस जगत में, ये झूठी महामाया ।।
मत रख कोई भ्रम ए-प्राणी,
रिश्तों की इस दुनिया में बसी है बेईमानी
ना किसी से दोस्ती, ना किसी से शत्रुता बढ़ानी।
रखो अपने मुख पर एक मीठी-सी वानी।
अपना-अपना कहने वाले भी करते हैं घात।
कब समझेगा प्राणी तू इतनी-सी बात ।।
झूठे से इस जगत में नहीं कोई किसी का ,
थोड़ा-सा सच खोलेगा राज सभी का,
रिश्तों की यह झूठी दुनिया, ना कोई अपना ना कोई पराया
सच तो ये है इस जगत में, ये झूठी महामाया ।।

हद से ज्यादा भी मत दिखाओ अच्छाई
ये बात सुनी-सुनाई नहीं हैं मेरे भाई,
ज्यादा अच्छाई का भी जो लोग फायदा उठायेंगे
वही लोग एक दिन तुम्हें सबसे पहले दोषी ठहरायेंगे
रिश्तों के बोझ से तुम्हे दबाएंगे, पीठ पीछे वहीं तुम्हारी बुराई गिनाएंगें।
करो बस उतनी ही भलाई, लोग ना कर सके कोई चतुराई
इस जगत में कोई नहीं, जो समझे पीढ़ पराई।
रिश्तों की यह झूठी दुनिया, ना कोई अपना ना कोई पराया
सच तो ये है इस जगत में, ये झूठी महामाया ।।
जब कोई मुसीबत दरवाजे पर होगी ,
रिश्तों की बड़ी-सी ये लिस्ट बिल्कुल खाली होगी।
खाली-खोखले रिश्ते देंगे नकाब उतार,
इससे पहले कुछ देर हो जाए ए-प्राणी खुद को सँवार
रखो अपना मन साफ मुँह पर बस जय श्री राम।
रिश्तों की यह झूठी दुनिया, ना कोई अपना ना कोई पराया,
सच तो ये है इस जगत में, ये झूठी महामाया ।।

कार्य और महिला

मन्जू रानी
डाटा एंट्री ऑपरेटर
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा,
रक्षा सेवाएं, नई दिल्ली

कामकाजी महिला, समृद्धि की पहचान,
सपनों को बुनती, खुद को सजाती अपने अधिकारों के निशान।

सुबह की पहली किरण में जागती,
खुशियों के संग सपने बुनती,
परिवार के साथ, कर्त्तव्यों का संग,
कठिनाईयों को चुनौतियों में भी हंसती।

कामकाजी महिला, समय की रानी,
अपने सपनों को पूरा करने की मानी,
कार्य क्षेत्र में उच्चताओं को छूती,
स्वतंत्रता के संग, अपने अधिकारों को पहचानती।

परिवार के प्यार को बाँटती,
कार्यक्षेत्र में अपना स्थान बनाती,
मुश्किलों के सामने सिर ऊँचा कर,
अपने हौंसले की बारीकी से जीत हासिल करती।

कामकाजी महिला, समृद्धि की अधिकारिणी,
सपनों की दुनिया में अपनी मुस्कान बिखेरती,
समाज में सम्मान पाती, समर्पण से भरी,
अपने कर्तव्यों को पूरा कर, स्वप्नों की ओर बढ़ती।

विश्वास और साहस से भरी,
कामकाजी महिला, जीवन की नई मिसाल बनाती।

त्याग

सुनीता सिंह
लेखापरीक्षक
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा,
रक्षा सेवाएं, नई दिल्ली

एक बार मध्य रात्रि के समय माता कौशल्या को अपने महल की छत पर किसी के चलने की आहट सुनाई दी, नींद खुल गई, तो पूछीं कौन है?

मालूम पड़ा श्रुतकीर्ति (सबसे छोटी बहु, शत्रुघ्न की पत्नी) है..!

माता कौशल्या ने उन्हें नीचे बुलाया, श्रुतकीर्ति आईं, मां के चरणों में प्रणाम कर खड़ी हो गईं..! माता कौशिल्या ने पूछा, श्रुति ! इतनी रात को अकेली छत पर क्या कर रही हो बेटी ? क्या नींद नहीं आ रही? शत्रुघ्न कहाँ है ?

श्रुतिकीर्ति की आँखें भर आईं, माँ की छाती से लिपटी, गोद में सिमट गईं, बोलीं माँ..! उन्हें तो देखे हुए तेरह वर्ष हो गए...! इतना सुनते ही माता कौशल्या का ह्रदय काँप उठा..! उन्होंने तुरंत आवाज लगाई, सेवक दौड़ पड़े, आधी रात को ही पालकी तैयार हुई, और शत्रुघ्न की खोज में माँ चली पड़ीं...!

अयोध्या में जिस नंदिग्राम में भरत जी तपस्वी होकर रहते हैं, शत्रुघ्न वहीं एक पत्थर की शिला पर, अपनी बाँह का तकिया बनाकर लेटे हुए थे, माता कौशल्या सिराहने बैठ गईं, बालों में हाथ फिराया तो शत्रुघ्न ने आँखें खोलीं, माँ ! उठे, चरणों में झुक कर... माँ ! आपने क्यों कष्ट किया ? मुझे बुलवा लिया होता..! माँ ने कहा, शत्रुघ्न ! यहाँ क्यों ?शत्रुघ्न जी की रुलाई फूट पड़ी, बोले- माँ ! भैया रामजी पिताजी की आज्ञा से वन चले गए, भैया लक्ष्मण जी उनके पीछे चले गए, भैया भरत जी भी नंदिग्राम में हैं, क्या यह महल, ये रथ और यह राजसी वस्त्र, विधाता ने मेरे ही लिए बनाए है? माता कौशल्या जी निरुत्तर रह गईं...!

रामकथा...

यह भोग की नहीं.... त्याग की कथा है...!

यहाँ त्याग की ही प्रतियोगिता चल रही है और सभी प्रथम हैं, कोई पीछे नहीं रहा... चारो भाइयों का प्रेम और त्याग एक दूसरे के प्रति अद्भुत-अभिनव और अलौकिक है..!

भगवान राम को 14 वर्ष का वनवास हुआ तो उनकी पत्नी सीता मैया ने भी सहर्ष वनवास स्वीकार कर लिया..! परन्तु बचपन से ही बड़े भाई की सेवा मे रहने वाले लक्ष्मण कैसे राम से दूर हो जाते...!

माता सुमित्रा से तो उन्होंने आज्ञा ले ली थी, वन जाने की.., परन्तु जब पत्नी "उर्मिला" के कक्ष की ओर बढ़ रहे थे तो सोच रहे थे कि माँ ने तो आज्ञा दे दी, लेकिन उर्मिला को कैसे समझाऊंगा...?? क्या बोलूँगा उनसे.?

यही सोच विचार करके लक्ष्मण जी जैसे ही अपने कक्ष में पहुंचे तो देखा कि उर्मिला जी आरती का थाल लेकर खड़ी थीं और बोलीं.., «आप मेरी चिंता छोड़ प्रभु श्रीराम की सेवा में वन को जाओ..., मैं आपको नहीं रोकूँगी...! मेरे कारण आपकी सेवा में कोई बाधा न आये, इसलिये साथ जाने की ज़िद भी नहीं करूंगी...!

लक्ष्मण जी को कहने में संकोच हो रहा था, परन्तु उनके कुछ कहने से पहले ही उर्मिला जी ने उन्हें संकोच से बाहर निकाल दिया...! लक्ष्मण जी चले गये परन्तु चौदह वर्ष तक उर्मिला ने एक तपस्विनी की भांति कठोर तप किया.!!

वन में "प्रभु श्री राम और माता सीता" की सेवा में लक्ष्मण जी कभी सोये नहीं, तो इधर उर्मिला ने भी अपने महलों के द्वार कभी बंद नहीं किये और सारी रात जाग जाग कर उस दीपक की लौ को बुझने नहीं दी...!

राम राज्य की नींव जनक जी की बेटियां हीं थीं..., कभी "सीता" तो कभी "उर्मिला"..! भगवान् राम ने तो केवल राम राज्य का कलश स्थापित किया..., परन्तु वास्तव में राम राज्य इन सबके प्रेम, त्याग, समर्पण और बलिदान से ही आया..!

जिस मनुष्य में प्रेम, त्याग, समर्पण की भावना हो उस मनुष्य में ही राम बसते हैं...!

जब कभी समय मिले तो इसे पढ़ने और समझने का प्रयास कीजिएगा..., जीवन को एक अलग नज़रिए से देखने और जीने की सीख मिलेगी, «रामायण» हमें जीवन जीने की सबसे उत्तम शिक्षा देती है..!

वक्त बदलता है

श्रीमाला
लेखापरीक्षक
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा,
रक्षा सेवाएं, नई दिल्ली

जिंदगी जो एक किताब है
हर कर्मों का हिसाब है
हमें न समय से शिकवा है
क्योंकि वक्त हमेशा बदलता है......||

कर्मों के परिणाम वक्त को भी बदल देता है
समय का यह हुनर है कि
जीवन के हर सवाल का जवाब भी बदल सकता है
क्योंकि वक्त हमेशा बदलता है......||

बिना रुके बिना थके जो दिन रात चलती है
समय की वह घड़ी जो कभी ना रुकती है
जो समय पर ही पूरी होती है
क्योंकि वक्त हमेशा बदलता है......||
दुनिया की भाग दौड़ में
तुम खुद को ही झोंक दिए
कल क्या होगा किसको पता
आहत तुम खुद जीना छोड़ दिए
बदलते हुए वक्त को समझने की भूल न करो

क्योंकि वक्त हमेशा बदलता है......||
वक्त के साथ चलो तो किस्मत बदल जाती है
आज मिला है तनावपूर्ण जीवन तो
कल सुनहरी जिंदगी भी मिल सकती है
क्योंकि वक्त हमेशा बदलता है......||

भौतिक संसार में मानसिक स्वास्थ्य का मूल्य

विशाल शर्मा
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा,
रक्षा सेवाएं, नई दिल्ली

“मानसिक स्वास्थ्य के बिना कोई स्वास्थ्य नहीं है; यह एक सामान्य व्यक्ति के लिए भी उतना ही महत्वपूर्ण है जितना कि एक पेशेवर के लिए।”

क्या है आरोग्यता ?

आपके अनुसार किसी व्यक्ति की भलाई के लिए क्या महत्वपूर्ण है? क्या किसी व्यक्ति की शारीरिक स्वस्थता उसे स्वस्थ स्थिति में मानने के लिए पर्याप्त है? मुझे पूर्ण विश्वास है कि आपका जवाब भी वही होगा जो मेरा और मेरी तरह उन सभी लोगों का है जिन्होंने जीवन के विभिन्न पहलुओं को बहुत करीब से देखा है। केवल शारीरिक स्वस्थता कभी भी किसी व्यक्ति को अपनी पूर्ण क्षमता के साथ कार्य करने में समर्थ नहीं बना सकती, यदि वह मानसिक रूप से पूरी तरह से निरामय न हो। किसी व्यक्ति को पूर्णतः स्वस्थ तभी कहा जा सकता है जब वह शारीरिक और मानसिक रूप से आरोग्य हो।

मानसिक स्वास्थ्य की परिभाषा

मानसिक स्वास्थ्य का तात्पर्य किसी व्यक्ति के मनोवैज्ञानिक, भावनात्मक और सामाजिक कल्याण से है।

विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) मानसिक स्वास्थ्य की अवधारणा को "कल्याण की स्थिति" के रूप में देखता है जिसमें व्यक्ति अपनी क्षमताओं का एहसास करता है, जीवन के सामान्य तनावों का सामना कर सकता है, उत्पादक और फलदायी रूप से काम कर सकता है, और उसके समुदाय में योगदान देने और एक अच्छा कार्य करने में सक्षम होता है। मानसिक फिटनेस का तात्पर्य मनोवैज्ञानिक कल्याण की स्थिति से है। यह दर्शाता है कि हम कैसा महसूस करते हैं, सोचते हैं और कार्य करते हैं, इसकी सकारात्मक भावना होती है, जिससे जीवन का आनंद लेने की क्षमता में सुधार होता है। मानसिक फिटनेस शब्द का उपयोग मनोवैज्ञानिकों, मानसिक स्वास्थ्य चिकित्सकों, स्कूलों, संगठनों और सामान्य आबादी द्वारा तार्किक सोच, स्पष्ट समझ और तर्क क्षमता को दर्शाने के लिए किया जाता है।

क्या मानसिक स्वास्थ्य महत्वपूर्ण है?

क्या आपको नहीं लगता कि हम दो जिंदगियाँ जीते हैं? आप कहेंगे हां, एक तो ऑफिस की ज़िंदगी और दूसरी घर की सुस्त जिंदगी। आप शायद जानते होंगे कि मैं जिन दो जिंदगियों के बारे में बात कर रहा हूँ वे मानसिक जीवन और शारीरिक जीवन हैं। हम आम तौर पर एक समय में केवल एक जीवन जीते हैं। आप देखेंगे कि हम आम तौर पर खोए हुए हैं और अपने आस-पास हो रहे भौतिक जीवन के बारे में अनजान हैं, खासकर यदि हम इतने बड़े हो गए हैं कि हमें

जो जीवन मिला है, उसके बारे में हमारे पास बहुत सारी यादें हैं। यदि हम वर्तमान में रहते हुए मानसिक और भौतिक दोनों जीवन एक साथ जी सकेंगे, तो वास्तव में हम अपने जीवन में सफल होंगे।

क्या आप निश्चित हैं कि आप अपना जीवन जी रहे हैं या बस इसे व्यतीत कर रहे हैं? जो व्यक्ति मानसिक रूप से बीमार है वह कभी भी जीवन नहीं जी सकता क्योंकि वह हमेशा अतीत या भविष्य में भटकता है लेकिन वर्तमान में कभी नहीं। थोड़ा गौर करेंगे तो पाएंगे कि भावनात्मक रूप से स्वस्थ और स्थिर व्यक्ति हमेशा जीवंत और वास्तव में जीवित महसूस करता है और जीवन की विभिन्न संभावनाओं को खोजने का प्रयास करता है। यदि आप मानसिक रूप से स्वस्थ और मजबूत हैं तो आप जीवन मे आई हुई मुश्किलों को चुनौतियों की तरह देखेंगे और उन मुश्किलों से निकलने के लिए सकारात्मकता से प्रयत्न करेंगे और ऐसे प्रयत्न ही अंततः आपके व्यक्तित्व के उत्थान का कारण बनेंगे। अन्यथा यही चुनौतियाँ आपको प्रकृति का आपके प्रति किया गया अत्याचार प्रतीत होगा और आप हताश होकर बैठ जाएँगे और अपनी क्षमता के अनुसार कार्य नहीं कर पाएंगे। अंत में, हम केवल यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि समस्याएं उतनी बड़ी नहीं हैं जितनी हम कल्पना करते हैं और यदि हम पर्याप्त रूप से जागरूक हों तो इन्हें आसानी से प्रबंधित किया जा सकता है और हम आनंद का जीवन जी सकते हैं।

क्या मानसिक अस्वस्थता खतरनाक हो सकती है ?

कई भावनात्मक कारक हमारे फिटनेस स्तर पर महत्वपूर्ण प्रभाव डालते हैं जैसे अवसाद, आक्रामकता, नकारात्मक सोच, हताशा और भय आदि। मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य समग्र स्वास्थ्य के समान रूप से महत्वपूर्ण घटक हैं। उदाहरण के लिए, अवसाद कई प्रकार की शारीरिक स्वास्थ्य समस्याओं, विशेष रूप से मधुमेह, हृदय रोग और स्ट्रोक जैसी लंबे समय तक चलने वाली स्थितियों के जोखिम को बढ़ाता है। इसी तरह, पुरानी स्थितियों की उपस्थिति मानसिक बीमारी के जोखिम को बढ़ा सकती है। जीवन द्वारा हम पर थोपी गई कठिनाइयों के कारण, मनुष्य में नकारात्मक भावनाओं को विकसित करने और अपने मानसिक स्वास्थ्य को खराब करने की प्रवृत्ति होती है। तनाव, चिंता और अवसाद से लेकर सिज़ोफ्रेनिया जैसी खतरनाक बीमारियाँ तक, सभी खराब मानसिक स्वास्थ्य का परिणाम हैं।

क्या है मानसिक स्वास्थ्य ख़राब होने के कारण ?

मानसिक बीमारी का कोई एक कारण नहीं है। कई कारक मानसिक बीमारी के जोखिम में योगदान कर सकते हैं। ख़राब मानसिक स्वास्थ्य का कारण आनुवांशिक कारणों से लेकर ख़राब जीवन शैली तक हो सकता है। ज्यादातर मामलों में, खराब मानसिक स्वास्थ्य खराब जीवन शैली, नकारात्मक दृष्टिकोण और खराब परिवेश के कारण होता है।

सुभाष और सुहास दो छात्र हैं जिन्होंने स्वतंत्रता दिवस पर अपना पहला भाषण दिया। दुर्भाग्य से, दोनों अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन नहीं कर सके। सुभाष के दोस्तों और उनके आसपास के लोगों ने उनके भाषण के लिए उनकी सराहना की और उन्हें उनके भविष्य के भाषणों के लिए शुभकामनाएं दीं लेकिन सुहास के आसपास के लोगों ने उन्हें असफल बताकर उनका मजाक उड़ाया। आप क्या सोचते हैं कि किसके पास उदास होने का कोई कारण है? ख़राब मानसिक स्वास्थ्य का सबसे पहला और स्पष्ट कारण वह परिवेश है जिसमें हम रह रहे हैं।

महेश और सोहन के वरिष्ठ अधिकारी ने उनसे कहा कि अगर वे समय पर कार्यालय नहीं आएंगे, तो उन्हें परिणाम के लिए तैयार रहना होगा। महेश को अपनी गलती का एहसास हुआ और उसने समय पर कार्यालय आने का प्रयास किया, लेकिन सोहन ने खुद को बताना शुरू कर दिया कि उसका वरिष्ठ अधिकारी उसके प्रति अनुचित और असभ्य है और वह उसके जैसा बॉस पाकर बदकिस्मत है। जीवन के प्रति किसका दृष्टिकोण उसके दु:ख का कारण बन सकता है?

अन्य कारणों में बचपन का आघात, अत्यधिक शराब पीने जैसी बुरी आदतें, वित्तीय अस्थिरता, जीवन की किसी महत्वपूर्ण घटना में विफलता, जीवन की अप्रत्याशितता और कई अन्य कारण शामिल हैं।

मानसिक समस्याओं से कैसे निपटें?

"आपको अपने विचारों पर नियंत्रण नहीं रखना है, आपको बस उन्हें आप पर नियंत्रण करने से रोकना है।"

आप आसानी से देख सकते हैं कि खराब मानसिक स्वास्थ्य के अधिकांश कारण स्वयं निर्मित होते हैं और हम केवल अनुशासित जीवन जीकर और दैनिक आधार पर कुछ मानसिक व्यायाम करके खुद को खराब मानसिक स्थिति से दूर रख सकते हैं। यदि हम निम्नलिखित में से कुछ अभ्यास दैनिक आधार पर करते हैं, तो हम कभी भी खराब मानसिक स्वास्थ्य की स्थिति में नहीं होंगे :

- ध्यान
- योग का अभ्यास
- शारीरिक व्यायाम
- एक स्वस्थ आहार
- अपने प्रियजनों के साथ समय बिताएं
- अपनी पसंदीदा गतिविधियों के लिए समय निकालें
- जीवन के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण
- प्रकृति के प्रति प्रेम और कृतज्ञता
- दूसरों की आलोचना करने से बचें
- अगर कोई आपसे बेहतर काम करता है तो उसकी सराहना करने में कभी संकोच न करें
- अत्यधिक शराब, धूम्रपान या किसी अन्य बुरी आदत से बचें

मानसिक स्वास्थ्य और हम

"स्वयं की देखभाल करना स्वार्थी या कमज़ोर होना नहीं है।"

आपको क्या लगता है हार किससे बना होता है? मैं जानता हूं कि ज्यादातर लोग कहेंगे कि हार रत्नों से बनता है, लेकिन उस डोरी के बारे में भूल जाएंगे जो इसे एक साथ बांधती है। वास्तव में, यह वह डोरी है जो यह सुनिश्चित करती है कि रत्न से हार बनेगा या कंगन। यह हमारे समाज की कड़वी सच्चाई है कि इस डोर के महत्व को हमेशा नजरअंदाज किया जाता है और तब तक मान्यता नहीं दी जाती जब तक कि डोर टूट न जाए और रत्न बिखर न जाएं। हमारा मानसिक स्वास्थ्य उस डोरी के समान है जिसके बिना शरीर की रत्न रूपी शारीरिक इन्द्रियाँ जीवन रूपी सुन्दर हार नहीं बना सकेंगी लेकिन हम अपने मानसिक स्वास्थ्य की परवाह तभी करते हैं जब हम उच्च अवसाद की स्थिति में होते हैं अन्यथा हम इसे नजरअंदाज कर देते हैं।

आपने पाया होगा कि खराब मानसिक स्थिति से जूझ रहे लोग इसके बारे में सार्वजनिक रूप से बोलने से झिझकते हैं और मैं आश्वस्त करना चाहता हूं कि यह उनकी गलती नहीं है, अन्यथा यह हमारा रूढ़िवादी समाज है जो ऐसे व्यक्ति को खुलकर बोलने की अनुमति नहीं देता है।

आपने अपने आस-पास के लोगों से ताकतवर लोगों की परिभाषा तो जरूर सुनी होगी। आपको बताया गया होगा कि मजबूत लोग रोते नहीं हैं, अपनी समस्याएं कभी व्यक्त नहीं करते हैं, समाज के तथाकथित आदर्श नियमों के अनुसार जीवन जीते हैं, हमेशा जीतते हैं और पैसे और प्रसिद्धि के मामले में करियर में सफल होते हैं। यदि आप इस परिभाषा में फिट नहीं बैठते हैं, तो आपको एक कमजोर व्यक्तित्व माना जाता है। आपने देखा होगा कि ज्यादातर फिल्मों के मुख्य किरदार भी सालों से मजबूत इंसान की इसी परिभाषा को दर्शाते आ रहे हैं। इन सबके बाद भी अगर कोई व्यक्ति अपनी मानसिक समस्याओं के बारे में खुलकर बात करने की हिम्मत करता है, तो उसके आसपास के लोग उसकी समस्याओं को समझे बिना उसका मजाक उड़ाते हैं या उसे कमजोर व्यक्तित्व वाला बता देते हैं।

यह सब मानसिक स्वास्थ्य से जूझ रहे व्यक्ति के लिए अपनी समस्याओं के बारे में खुलकर बात करना बहुत कठिन बना देता है। हमारी सामाजिक रूढ़िवादिता खुली बातचीत को हतोत्साहित करती है जो इलाज में देरी, सामाजिक अलगाव, आत्महत्या के मामलों में वृद्धि का कारण बनती है।

हमें क्या करना चाहिए?

खराब मानसिक स्वास्थ्य के घातक परिणामों को कम करने के लिए, यह हमारी जिम्मेदारी है कि हम खुद को और दूसरों को शिक्षित करें, व्यक्तिगत अनुभव साझा करें, मानसिक स्वास्थ्य पहल का समर्थन करें, खुली बातचीत को प्रोत्साहित करें और मानसिक स्वास्थ्य को शारीरिक स्वास्थ्य को समान ही महत्वपूर्ण मानें।

सरकार का योगदान

भारत सरकार ने भी मानसिक स्वास्थ्य समस्याओं से पीड़ित लोगों की बेहतरी के लिए कई कदम उठाए हैं।

- देश में गुणवत्तापूर्ण मानसिक स्वास्थ्य परामर्श और देखभाल सेवाओं तक पहुंच को और बेहतर बनाने के लिए राष्ट्रीय टेली मानसिक स्वास्थ्य कार्यक्रम को अक्टूबर 2022 में लॉन्च किया गया था।
- सरकार ने मानसिक समस्याओं से जूझ रहे व्यक्तियों के लिए मानसिक स्वास्थ्य देखभाल और सेवाएं प्रदान करने, उनके अधिकारों की रक्षा, प्रचार और पूर्ति करने के लिए मानसिक स्वास्थ्य देखभाल अधिनियम 2017 पारित किया।
- मानसिक विकारों के भारी बोझ और मानसिक स्वास्थ्य के क्षेत्र में योग्य पेशेवरों की कमी को दूर करने के लिए, भारत सरकार 1982 से राष्ट्रीय मानसिक स्वास्थ्य कार्यक्रम (एनएमएचपी) लागू कर रही है।

निष्कर्ष

अंत में, हम यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि अधिकांश मानसिक समस्याएं हमारी लापरवाही, नकारात्मकता, अधिक सोचने, खराब परिवेश और खराब जीवनशैली के कारण होती हैं। अनुशासित और उद्देश्यपूर्ण जीवन का पालन करने और दैनिक आधार पर कुछ सरल व्यायाम करने से स्वस्थ्य से संबंधित अधिकांश समस्याएं हल हो सकती हैं। इसलिए, हम कह सकते हैं कि हम मानसिक स्वास्थ्य संबंधी मुद्दों और इसके समाधानों के बारे में जितना अधिक जागरूक होंगे, यह उतना ही कम खतरनाक होगा।

"मानसिक स्वास्थ्य महत्वपूर्ण है! आइए सभी के लिए एक सहायक और समावेशी वातावरण बनाने के लिए मिलकर काम करें।"

आज की नारी

शेफाली सिंह
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा,
रक्षा सेवाएं, नई दिल्ली

लड़की एक सुन्दर सी कोमल कली बनकर जन्मी,
कहीं पैदा होते ही ठुकराई,
तो कहीं प्यार के अभाव में ना पनपी।

क्यों बेटियाँ ही होती है परिवार की लाज,
और बेटों को मिलता है घर का ताज़।
क्यों उनको ही बतलाया जाता है हर बार,
घर की चार दीवारी ही है उनका संसार।
अगर करने हों उनको अपने सपने साकार,
तो क्यों नहीं है उनके लिए भी खुले सभी द्वार।

हर घड़ी अदा कर रही है एक नया रोल,
कभी माँ कभी बेटी कभी बहन बनकर जाती है खुद को भूल,
है नारी ही जीवन की जननी,
फिर भी नहीं है इसका कोई मोल।

हर रोज़ होता है इस पर अत्याचार,
कही घरेलू हिंसा तो कही बलात्कार,
एक ओर होती है पूजा देवी बनाकर,
और दूसरी ओर होता है रोज़ तिरस्कार।
छुआ है हर छेत्र की उँचाईयों को,
चाहे हो जाने की अंतरिक्ष में बात,
या फिर हो पहाड़ की चोटी को छूने का ख्वाब।

नाम अपना बनाया है,
हर काम करके दिखाया है,
फिर भी क्यों समाज में खुदको,
पुरूषों से पीछे ही खड़ा पाया है।

हर कदम पर है संघर्ष,
लिए आगे बढ़ रही है बेडियों का भोज,
रोके अब ना रुकने वाली,
ये आज की नारी है,
जो बढ़ रही है आगे हर रोज़।

खुद से खुद को मिलाना है,
बनानी है एक नई पहचान,
सदियों से बेचारी कहला लिया,
अब करना है ये एलान।
ना रुकना है ना झुकना है,
डर की कोई गुंजाईश नहीं,
अपनी शर्तों पर जीवन जीना है,
मरेगी अब कोई ख्वाइश नहीं।

महिला दिवस

महिला दिवस 2024

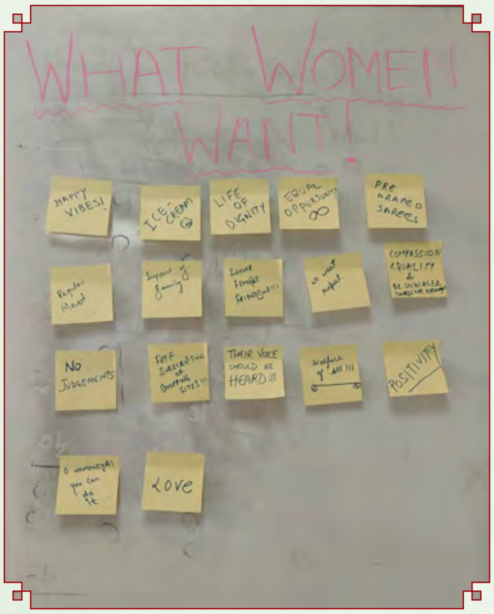
WHAT WOMEN WANT!
HAPPY VIBES!
ICE-CREAM
LIFE OF DIGNITY
EQUAL OPPORTUNITY
PRE DRAPED SAREES
COMPASSION EQUALITY
NO JUDGEMENTS
THEIR VOICE SHOULD BE HEARD!!!
POSITIVITY
Love

मुक्तेश्वर एक अविस्मरणीय यात्रा

किरनजीत कौर
वरिष्ठ लेखा परीक्षा अधिकारी
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा,
रक्षा सेवाएं, नई दिल्ली

कहीं एक शेर पढा था
सैर कर दुनिया की गाफिल
जिदंगी फिर कहाँ ?
जिंदगी गर रही तो
नौजवानी फिर कहाँ ?

इन पक्तियों को पढ़ने के पश्चात मेरे मन में भी घूमने का विचार आया और मैंने अपने मित्रों से अपने मन की बात कही और कहीं चलने के लिए कहा। बहुत विचार के पश्चात सबने पहाड़ों की रोमांचक यात्रा का प्लान बनाया और मुक्तेश्वर (उतराखण्ड) जाने का कार्यक्रम बन गया।

ऑफिस में शनिवार व इतवार की छुट्टी थी तो सबने दो दिन की छुट्टी अप्लाई की और अपनी कार से मुक्तेश्वर जाने का कार्यक्रम बना लिया। मुक्तेश्वर जाने के लिए दिल्ली से करीब 8 घण्टे का समय लगता है। हम लोगो ने शुक्रवार रात को ही अपना सारा सामान कार में रख लिया ताकि कुछ सामान छूट न जाए। सुबह करीब 5 बजे चाय पी और हम लोग मुक्तेश्वर की ओर रवाना हो गए। सभी के मन रोमांच से भरे हुए थे। सुबह के समय ट्रैफिक काफी कम था। करीब सुबह 10 बजे हम लोग मुरादाबाद पहुंचे। मेरे सभी मित्र नींद में थे क्योंकि सभी सुबह जल्दी उठे थे। 11 बजते ही मुझे भूख लगने लगी थी तो हम ने हाईवे के किनारे एक ढ़ाबे में नाश्ता करने की लिए कार रोकी। सभी ने वहाँ पर आलू के परांठे, दही व चाय ली, नाश्ता बहुत स्वादिष्ट था। उसके पश्चात हमने फिर से अपनी यात्रा प्रारम्भ की। कार में अपनी पसंद के पुराने गाने चला रखे थे जो यात्रा का मजा और दुगना कर रहे थे।

हलदवानी पहुँचते- पहुँचते दोपहर हो गई थी। हलदवानी के पश्चात पहाड़ी इलाका शुरु होता है अत: सब ने तय किया कि वहीं पर रुककर दोपहर का खाना खाया जाए। एक अच्छा सा होटल देखकर सबने वहा खाना खाया एवं गाड़ी में भी पैट्रोल भरवाया ताकि उसका पेट भी भरा रहे। पहाड़ी इलाका शुरु हुआ सामने बड़ी-बड़ी पहाडियाँ दिखाई देने लगीं तो सब की नींद गायब हो गई। सभी ऊँची-ऊँची पहाडियों का मजा लेने लगे। मैंने अपनी गाड़ी

की स्पीड कम रखी हुई थी, ताकि पहाड़ियों में मोड़ पर कोई खतरा न हो। एक तरफ बड़े-बड़े पहाड़ एवं दूसरी तरफ गहरी खाई को देखकर भय भी लग रहा था पर इसी तरह मजे करते हुए हम नैनीताल पहुँच गये। वहां पर बहुत ट्रैफिक जाम था तो ट्रैफिक पुलिस ने हमारी गाड़ी भीमताल की तरफ मोड़ दी। भीमताल पहुँचे तो वहा हल्की-हल्की बारिश शुरु हो गई थी और हवा में ठंडक बढ़ गई थी। गाड़ी चला कर मुझे थोड़ी थकावट भी हो रही थी तो भीमताल में हमने गाड़ी एक ढाबे के किनारे लगाई। वहां पर गरमा-गरम मैगी खाई और तेज शक्कर वाली चाय पी तो सारी थकावट दूर हो गई। फिर से तरोताजा होकर हमने आगे का सफर शुरु किया। मुक्तेश्वर पहुंचते-पहुँचते रात घिर गई थी। पहाड़ियों में दूर-दूर कही रोशनी टिमटिमाती नजर आ रही थी जो बहुत सुंदर लग रही थी। मौसम भी काफी ठंडा हो चला था।

मुक्तेश्वर में हमने रिसोर्ट रामश्वेरम मे अपने कमरे बुक करा रखे थे। वहाँ पहुँच कर हमारी खुशी का ठिकाना नहीं रहा जब हमने देखा कि हमारे कमरे की बालकोनी से मुक्तेश्वर की सुंदर पहाड़ियों नजर आ रही थी जिसका नजारा देखते ही बन रहा था। सभी ने बालकनी में बैठकर रात का खाना खाया और सोने चले गए क्योंकि यात्रा लम्बी थी और सब थक चुके थे।

अगले दिन हम सभी ने तय किया की होटल में ही रह कर वहाँ के मौसम का मजा लिया जाए। शाम को हम सब लोग घूमने निकले, परंतु कुछ ही देर में काले घने बादल छा गए और मूसलाधार बारिश शुरु हो गई हम लोग भीगते हुए वापिस होटल पहुंचे। सभी ठंड से कांपने लगे थे। सभी ने कपड़े बदले और कम्बल में घुस गए। अगले दिन यानि सोमवार को भी मौसम बहुत खराब रहा और तेज बारिश के चलते हम कहीं बाहर घूमने नहीं जा सके। बस होटल की बालकनी में बैठकर मौसम के मजे लिए और चाय के साथ गरम-गरम पकौड़े खाए। मंगलवार को सुबह नाश्ता करने के पश्चात करीब 10 बजे हम लोग दिल्ली के लिए रवाना हो गए। हालांकि हम लोग मुक्तेश्वर घूम नहीं पाए, परंतु वहाँ के मौसम का खूब आनंद लिया। रात के करीब 11 बजे हम लोग घर पहुँच गए इस तरह लम्बे सफर और छोटे से कार्यक्रम का अंत हुआ।

मीठे अफसाने

आई वी एस श्रीनिवास
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
कार्यालय निदेशक लेखापरीक्षा
(नौसेना), विशाखापट्टनम

छूट रहा है ये सब,
पर मिलेंगे मित्र कुछ पुराने
लौट रहा हूं यहां से लेकर
मीठे अफसाने !!!
वो यादें जब जन्म-दिवस पर
काटा जाता था केक
क्या उत्तर क्या दक्षिण
पूरा कार्यालय हो जाता एक
वो यादें जब साथियों संग
जाते थे पिकनिक मनाने
लौट रहा है यहां से लेकर
मीठे अफसाने!!!
प्रतिवर्ष दीवाली में जब मिलकर
दीप जलाया करते थे
पूरा कार्यालय उस खूशबू से
महकाया करते थे
भूल नहीं सकता जब नब-वर्ष पर
सबको गले लगाया करते थे
याद आयेगे मुझको ये
छूटते हुए जमाने
लौट रहा है यहां से लेकर
मीठे अफसाने!!!

स्वतंत्रता और गणतंत्र दिवस जब
जोर-शोर से मनाते थे
नयी भर्तियों, सेवानिवृत्तियों पर
क्या दावतें उड़ाते थे
नये कार्यालय में सब याद आयेगा
जब जाऊंगा खाने या खिलाने
लौट रहा हूं यहां से लेकर
मीठे अफसाने !!!

मिला सभी का महयोग-समन्वय
निभाने में ड्यूटी जिम्मेदारी
हे डीजीएडीएस, डीजीए नेवी, डीए (एन) वाईज़ैग!!
सब कृपा रही तुम्हारी
धन्यवाद आपका रखा मुझे भी
एक परिवार बनाकर
8 वर्षों तक साथ रहा मैं
सभी अपने फर्ज निभाकर
वक्त हुआ पूरा, अब चलता हूँ
ये खोकर कुछ और पाने
लौट रहा हूँ यहाँ से लेकर
मीठे अफसाने!!!

हिंग्लिश - संवाद की सरलता या भाषा की विकृति?

ज्योति तोमर
सहायक लेखा परीक्षा अधिकारी
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा,
रक्षा सेवाएं, नई दिल्ली

हिंग्लिश, हिंदी और अंग्रेज़ी भाषा का संगम है, जो भारतीय समाज में तेजी से लोकप्रिय हो रहा है। यह शब्द "हिंदी" और "इंग्लिश " (अंग्रेज़ी) के मेल से बना है, और आजकल की बातचीत में इसका प्रयोग काफी सामान्य हो गया है। हिंग्लिश का उपयोग शहरी युवा वर्ग के बीच खासा प्रचलित है, और इसके कई सामाजिक और सांस्कृतिक कारण हैं ।

हिंग्लिश का सबसे बड़ा फायदा यह है कि यह संवाद को सरल और सहज बनाता है। हिंदी और अंग्रेज़ी दोनों भाषाओं का मिश्रण होने के कारण, लोग अपनी बात आसानी से और तेजी से व्यक्त कर सकते हैं। यह विशेष रूप से तब उपयोगी होता है जब बातचीत में तकनीकी या ऐसे शब्दों का प्रयोग हो, जिनका सामान्तया हिंदी भाषा अनुवाद प्रचलन में न हो।

आजकल के युवाओं के बीच हिंग्लिश का प्रचलन बढ़ा है, क्योंकि यह आधुनिकता और फैशन का प्रतीक माना जाता है। यह भाषा का मिश्रण युवाओं की पहचान को दर्शाता है और उनकी जीवनशैली के बदलाव को भी प्रदर्शित करता है। भाषा समय के साथ बदलती है और नई शैलियों का निर्माण करती है। हिंग्लिश ने हिंदी और अंग्रेज़ी दोनों भाषाओं को एक नया स्वरूप प्रदान किया है, जो विभिन्न सामाजिक और सांस्कृतिक संदर्भों में प्रासंगिक है।

जहाँ एक तरफ हिंग्लिश का उपयोग भाषाओं के विकास का संकेत है और आधुनिकता की निशानी हो सकता है, वहीं दूसरी तरफ इसके कुछ नकारात्मक पहलू भी हैं। कई बार यह भाषा के सही उपयोग में बाधा उत्पन्न कर सकता है और भाषा की शुद्धता को प्रभावित कर सकता है। युवा वर्ग में हिंगलिश के लगातार बढ़ते प्रयोग से उनकी हिंदी की भाषा की पकड़ कमज़ोर हुई है और जो व्यक्ति सिर्फ हिंदी भाषा का प्रयोग करता है उसे पिछड़ा समझा जाता है।

इसके अलावा, कुछ लोग इसे सांस्कृतिक पहचान के नुकसान के रूप में भी देख सकते हैं। युवा पीढ़ी परंपरागत हिंदी साहित्य और लोककथाओं से दूर हो रही है। हिंग्लिश के बढ़ते प्रभाव से नई पीढ़ी परंपरागत साहित्यिक रूपों से जुड़ाव महसूस नहीं कर पा रही है, जिससे सांस्कृतिक कला और साहित्य को खतरा हो सकता है। भाषा सांस्कृतिक पहचान का एक महत्वपूर्ण भाग है। यदि भाषा का स्वरूप बदलता है, तो सांस्कृतिक पहचान का स्वरूप भी प्रभावित हो सकता है।

अंततः हिंग्लिश, हिंदी और अंग्रेज़ी का एक दिलचस्प मिश्रण है जो भारतीय समाज की आधुनिकता और विविधता को दर्शाता है। यह भाषा का एक नया प्रयोग है, जो संवाद को आसान और मजेदार बनाता है। हालांकि इसके साथ कुछ चुनौतियाँ भी जुड़ी हैं, लेकिन इसके सकारात्मक पहलू समाज में एक नई भाषा शैली के रूप में उभर रहे हैं।

मेरे पापा गोल मटोल

आव्या श्री पाण्डेय पुत्री आर.पी. पाण्डेय
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
कार्यालय निदेशक लेखापरीक्षा
पूर्वी कमान, पटना

मेरे पापा गोल मटोल।
बातें करतें मिश्री घोल॥
अच्छी बातें मुझे समझाते।
प्यार से मुझे शहर घूमाते॥
पापा जब भी ऑडिट पर जाते।
समोसा, पिज़्ज़ा भी गायब हो जाते।
घर में आई है एक नई रौनक।
शायद खिसक गई मेरी शोहरत॥
पापा ने मुझको पास बुलाया॥
गले लगा के ये समझाया।
मैं ही उनकी प्यारी बिटिया हूँ।
मैं उनकी नन्ही दुनिया हूँ।
पर नजर में उनके गुड़िया हूँ॥

जेब

कंचन वर्मा
लेखापरीक्षक
कार्यालय महानिदेशक लेखा परीक्षा
रक्षा सेवाएं, नई दिल्ली

बड़े दिनों से गायब हैं
बड़ी उदासी छायी है
हमने जेबें पाई नहीं
हमने जेबें कमाई हैं।

जेबों की कमी पर हमनें
जिस रोज सवाल उठाया था
सुना है तब इस धरती पर
बड़ा सैलाब आया था।

यार,जेब के लिए इतनी जिद, इतना झगड़ा
बेवकूफ मुझे हर कोई बोला
क्या जरुरत है जेबों की
दिया तो है पर्स, पाऊच और झोला।

अब पर्स क्या जनाब...
पर्स के दलदल में खोए छुट्टे, खोए प्रेमपत्र कहीं
दोस्तो, पर्स मुझे अत्यंत प्रिय है
शिकायत पर्स के बोझ का नहीं है
शिकायत मेरी पसंद और सोच का है

अब मुझे बताओ आखिर क्यों है ये जेब होने का डर
क्या रख लेंगे इन जेबों में हम
क्योंकि मुट्ठी में है तकदीर हमारी
है क्या हर ऊँगली शोल्डर से कम।

व्यस्तता के दिनों में हमने हर एक उँगली में चीजें उठाई हैं
छुट्टे पैसे, लिपस्टिक, फोन, चाबी
बस-बस थकिये मत
ये तो मैने एक ही हाथ की कहानी सुनाई है
बोझ उठाती ऊँगलियाँ आज हक के लिए उठाई हैं
हमने जेबें पाई नहीं, हमने जेबें कमाई है।

17वीं सदी में सुना है हम सभी बाजेब थे- (पाकेटफुल)
छीन ली हमारी जेबें हमसे किसी ने पूछा नहीं
कहा गया जब कमाती नही तो जेबों में रखोगी क्या
“एक्सक्यूज मी जनाब” हम नहीं कमाँएगे ये आपने कैसे डिसाइड किया
ये भी कहा गया-
अकेली नहीं जाओगी बाहर
हम साथ तुम्हारे जाएँगे
तुम्हारी हर जरुरतों को
हम ही तो पूरी कराएँगे।

इस तरह दुनिया चलती तो हम सब महारानी बन जाते
हर वर्ल्ड—लीडर की कहानी औरतों की कहानी बन जाती।
सेवा हमारी की गई नहीं
सेवक हमें बनाया गया
हमें बेड़ियाँ पहनाकर
उसे आभूषण बताया गया

चलिए बड़ी-बड़ी बातें नहीं करती
छोटी-सी बात बताती हूँ
सुनाती हूँ जेबों की कमी से
क्या-क्या नहीं कर पाती हूँ।

अब अपना दौर भी आएगा
मैं क्या कहाँ रखना चाहती हूँ
ये मुझे समाज नहीं बताएगा

यूँ नकली जेबे जीन्स में देखे
हमें यूँ न सताया करो
बोल्ड लेटर्स में अन्डरलाइन करके
हमें यूँ न चिढ़ाया करो।

कहा था क्रिस्टीयन डिओर ने -
मेन हेव पाकेट टू कीप थिंग्स
एण्ड वुमन फॉर डेकोरेशन

उँगलियों को अब फ्री करना होगा
एक मुट्ठी में जोड़ने के लिए
बोझ से आजादी माँगती है
इन चार-दीवारी को तोड़ने के लिए
ये सवाल नहीं बस जेबों का,
ये हमारे हक की लड़ाई है।
हमने जेबे पाई नहीं,
हमने जेबें कमाई हैं।।

कृत्रिम बुद्धिमत्ताः भविष्य का मार्गदर्शन

अभिषेक कुमार मीणा
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा,
रक्षा सेवाएं, नई दिल्ली

कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) ने आधुनिक समाज में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभानी शुरू कर दी है। यह तकनीक न केवल हमारे दैनिक जीवन को सरल बना रही है, बल्कि विभिन्न क्षेत्रों में क्रांतिकारी बदलाव भी ला रही है। आइए एआई के कुछ महत्वपूर्ण पहलुओं और उसके प्रभाव पर एक नज़र डालें।

शिक्षा में एआई

शिक्षा के क्षेत्र में एआई छात्रों के सीखने के अनुभव को व्यक्तिगत और प्रभावी बना रहा है। एआई आधारित शिक्षण उपकरण छात्रों की सीखने की गति और शैली के अनुसार सामग्री प्रदान करते हैं। इससे छात्रों की समझ में सुधार होता है और उन्हें बेहतर परिणाम प्राप्त होते हैं। इसके अलावा, एआई का उपयोग छात्रों के प्रदर्शन का आकलन करने और उन्हें सुधारने के लिए व्यक्तिगत सुझाव देने में भी किया जा रहा है।

स्वास्थ्य सेवा में एआई

एआई का उपयोग रोगियों की देखभाल में सुधार कर रहा है। एआई आधारित उपकरण और सॉफ्टवेयर डॉक्टरों को सटीक निदान और उपचार की योजना बनाने में मदद करते हैं। उदाहरण के लिए एआई एल्गोरिदम का उपयोग करके कैंसर जैसी गंभीर बीमारियों का प्रारंभिक चरम में ही पता लगाया जा सकता है। इसके अलावा एआई संग संचालिक रोबोट सर्जरी में उच्च सटीकता और न्यूनतम त्रुटियों के साथ सहायता कर रहे हैं।

परिवहन में एआई

परिवहन क्षेत्र में एआई स्वचालित वाहनों के विकास और संचालन में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। एआई से संचालित स्वचालित कारें और ड्रोन यातायात दुर्घटनाओं को कम करने और यातयात जाम को हल करने में मदद कर रहे हैं। इसके अलावा एआई आधारित नेविगेशन सिस्टमस यात्रियों को सबसे कम समय में उनकी मंजिल तक पहुंचाने में सहायता करते हैं ।

फोटो एवं वीडियो प्रौद्योगिकी

एआई क्रांति लाया है कि वीडियो सामग्री कैसे बनाई जाती है, विश्लेषण की जाती है और उपयोग की जाती है। यह रीयल टाइम वीडियो एनालिटिक्स, चेहरे की पहचान और स्वचालित सामग्री टैगिंग जैसी उन्नत सुविधाओं को सक्षम बनाता है। एआई दृश्य पहचान और पृष्ठभूमि प्रतिस्थापन जैसे कार्यों को स्वचालित करके वीडियो संपादन को बढ़ाता है, जिससे उत्पादन अधिक कुशल हो जाता है। निगरानी में एआई संचालित वीडियो विश्लेषण असामान्य गतिविधियों का पता लगाकर अधिकारियों को सतर्क करके सुरक्षा में सुधार करता है।

व्यापार और उद्योग में एआई

एआई का उपयोग उत्पादकता बढ़ाने और लागत को कम करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। एआई आधारित ऑटोमेशन से उत्पादन प्रक्रिया को तेज और सटीक बनाया जा रहा है। इसके अलावा एआई का उपयोग प्रचार और ग्राहक सेवा में भी किया जा रहा है, जिससे व्यापारिक संगठनों को ग्राहकों की आवश्यकताओं को बेहतर ढंग से समझने और उन्हें पूरा करने में मदद मिलती है।

समय का महत्व

एआई समय प्रबंधन में भी महत्वपूर्ण योगदान दे रहा है। एआई आधारित उपकरण और एप्लिकेशन लोगों को उनके कार्यों को प्राथमिकता देने और समय का सही उपयोग करने में मदद करते हैं। इससे व्यक्तिगत और पेशेवर जीवन में संतुलन बनाए रखना आसान हो जाता है।

क्या एआई इंसानों से आगे निकल जाएगा?

एआई के इंसानों पर अलग-अलग फायदे हैं, जैसे बेहतर गति और सटीकता, मेमोरी क्षमता और रिकॉल।

एआई ने पहले ही कई कार्यों में मानव बुद्धिमत्ता हासिल कर ली है, शतरंज जैसे खेलों में हरा सकती है।

जैसे-जैसे क्वांटम कंप्यूटर की शक्ति बढ़ रही है, एआई अंततः मानव मस्तिष्क की क्षमता को पार कर सकता है, क्योंकि एक निश्चित बिंदु के बाद, मानव इनपुट के बिना एआई खुद का बेहतर बनाने में सक्षम होगा।

किन क्षेत्रों में ऐसा नहीं होगा?

बढ़ती टेकनोलॉजी से ऐसा स्वचालन का स्तर प्राप्त हुआ जिसकी पहले कल्पना भी नहीं की जा सकती थी। लेकिन मानवीय बुद्धि पैटर्न पहचान से कहीं आगे जाती है।

एआई मानवीय बुद्धि की नकल करने की कोशिश करता है, लेकिन भावनात्मक बुद्धिमत्ता, बौधिक बुद्धिमत्ता की तरह नहीं है और साथ ही एआई को दुख और दर्द का एहसास भी नहीं होता। अनुकूलनशीलता मनुष्यों को कई वातावरणों के अनुकूल ढाल सकती है।

संवेदी धारणा और दुनिया को सूक्ष्म तरीकों से समझना, बॉक्स के बाहर सोचने की क्षमता, शारीरिक बाधाएँ जैसी कई महत्वपूर्ण सीमाएँ रहेंगी।

क्यों मनुष्य हमेशा आगे रहेगा?

एआई ने काफी प्रगति की है, लेकिन अभी तक अंतर्ज्ञान, सहानुभूति और रचनात्मकता की आवश्यकता वाले कार्यों में नहीं। हम बचपन में ही आलोचनात्मक तर्क सीखते हैं, भावना की समझ और कौन सी घटनाएँ इसे प्रेरित कर सकती हैं।

मानव-स्तर की बुद्धिमत्ता हमें तर्क करने, समस्याओं को हल करने और निर्णय लेने की अनुमति देती है। इसके लिए अनुभव से सीखने सहित कई संज्ञानात्मक क्षमताओं की आवश्यकता होती है।

मानव आध्यात्मिक और प्रार्थनाओं में विश्वास रखते हैं, जो खुद से बड़ी किसी चीज़ से जुड़ाव की भावना प्रदान करते है।

मनुष्य का आंतरिक मूल्य क्या है जिसे काई भी मशीन कभी प्राप्त नहीं कर सकती ?

रचनात्मकता और नवाचारः कुछ नया बनाने या अविष्कार करने की मानवीय क्षमता का अभाव सदैव एआई में रहेगा।

भावनात्मक गहराईः मनुष्य में अपनी एवं दूसरों की भावनाओं की गहरी समझ होती है।

अंतर्ज्ञानः अनुभव के आधार पर मनुष्य निर्णय ले सकते हैं, खासकर अनिश्चित परिस्थितियों में। **समाजिक कौशलः** मनुष्य संबंध बनाने में माहिर होते है। सूक्ष्मताओं और वार्तालाप की समझ होती है। **आत्म- जागरूकताः** मनुष्यों में चेतना और अपने विचारों और कार्यों, अस्तित्व और उद्देश्य पर चिंतन करने की क्षमता होती है।

व्यक्तित्वः प्रत्येक मनुष्य में गुणों, अनुभवों और दृष्किोणों का एक अनूठा संयोजन होता है।

निष्कर्ष

कृत्रिम बुद्धिमत्ता ने हमारे जीवन के विभिन्न पहलुओं में क्रांतिकारी बदलाव लाए हैं। स्वास्थ्य सेवा, शिक्षा, व्यापार, परिवहन और समय प्रबंधन जैसे क्षेत्रों में एआई का प्रभाव न केवल वर्तमान को बेहतर बना रहा है, बल्कि भविष्य को भी एक नई दिशा दे रहा है। एआई का भविष्य अत्यधिक रोमांचक और अनंत संभावनाओं से भरा हुआ है। यह एआई तकनीक तेजी से विकसित हो रही है और आने वाले समय में हमारे जीवन के हर पहलू को बदलने की क्षमता रखती है। एआई के युग में सभी को रचनात्मक और अलोचनात्मक सोच कौशल की आवश्यकता होगी क्योंकि ये ऐसी है जो चीज़ केवल मानव ही ला सकता है।

यह हमारे जीवन को अधिक सरल, कुशल और सुखद बना सकती है, सही और नैतिकता के साथ एआई हमें एक उज्ज्वल और एक बेहतर प्रगतिशील समाज की ओर बढ़ा रही हैं।

कौन जाने क्या होगा

रवि कुमार
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
कार्यालय वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
रक्षा सेवाएं, (थल सेना) कोलकाता

बीत रहा है जीवन, नदियों के बहाव सा
सारा जहान और वक्त, किसमें है ठहराव सा
बदलते हैं सबके चेहरे पल-पल और पल भी बदल जाता है अगले पल
दुनिया थमेगी या यूँ ही चलती रहेगी
क्या कोई है, जो खबर रखता होगा
कौन जाने क्या होगा।

बात निकली थी अन्दर मेरे, यूँ ही बैठा था कभी
सोच-सोच कर बीत गए दिन, कुछ भी हासिल हुआ नहीं
फिर सोचा कौन है वो, जो ये सब लिखता रहता है
आखिर किस आधार पर, किसी को कुछ भी देता है
मेहनत और तकदीर है क्या, क्या कोई एक काफी है
या मेहनत के बाद भी, तकदीर का हिस्सा बाकी है।

सोच कर उलझन और बढ़ गयी
कि किस पर ध्यान रखना होगा
फिर से वही सवाल है मन में,
कौन जाने क्या होगा।

ख्वाब की दुनिया

सुधा शुक्ला
सहायक लेखा परीक्षा अधिकारी
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा,
रक्षा सेवाएं, नई दिल्ली

जीवन की कठिनाइयों से लड़ते-लड़ते जब कभी हम थक जाते हैं तब मन में यह विचार उत्पन्न होता है कि क्या होता अगर यह जीवन कुछ कम उलझा हुआ होता ? क्या होता 'गर हम सपनों में देखी गयी किसी खुशनुमा, सीधी, स्वच्छ दुनिया में रह रहे होते ? बालपन से बड़े होने तक ऐसा कई बार होता है जब हम एक ख्वाबी दुनिया में रहना चाहते हैं। ऐसे ही जीवन के विभिन्न आयु वर्ग में जीवन के लिए की गयी कल्पनाओं को मैंने एक कविता के माध्यम से व्यक्त करने की कोशिश की है, जो इस प्रकार है :

रात को परियाँ आती होतीं,
संग हमारे गाती होतीं,
झील किनारे गुल की बरखा,
रंज-ओ-ग़म की बात न होती।

सूरज उगता देर से थोड़ा,
चाँदनी ज्यादा रातें होतीं,
पंछी संग हम उड़ते जाते,
हवा हमारी साथी होती।

दादी सुनाती जो भी कथाएँ
सत्य के रस में छानी होतीं,
दमन शमन न शोषण कोई
पीड़ पराई जानी होती।

उनके लब और मेरे किस्से
हर्फ़- हर्फ़ कहानी होती,
उनके संग जो लम्हा होता
वक़्त की नब्ज़ भी थामी होती।

यूँ भी होता, वाह! क्या होता
जीवन रस खुशहाली होती,
फर्ज़ करो दिलवालों दो पल,
ख्वाब की गर इक दुनिया होती।

भारत में गेमिंग का उदय

अभिषेक कुमार मीणा
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा, रक्षा सेवाएं
नई दिल्ली

आधुनिक तकनीक और डिजिटल क्रांति ने हमारे जीवन के हर पहलू को बदल दिया है, और गेमिंग इसकी एक महत्वपूर्ण कड़ी है। गेमिंग ने पिछले कुछ दशकों में मनोरंजन की दुनिया में क्रांति ला दी है।गेमिंग को अब एक सच्चे कला रुप और एक बड़े व्यवसाय के रूप में पहचाना जाता है, गेमिंग ने एक लंबा सफर तय किया है, एक छोटे से शौक से एक विशाल वैश्विक घटना में बढ़ना, जिसका बहुत से लोग आनंद लेते हैं। भारत में बढ़ते गेमिंग उद्योग का मूल्य ₹77 अरब से भी अधिक है, और यह दुनिया में नंबर 1 है। गेमिंक सबसे बड़े वैश्विक बाजारों मे से एक है, भारत की विशाल युवा आबादी इस विस्तार को बढ़ावा दे रही है।

गेमिंग संस्कृति को लोकप्रिय बनाने में सोशल मीडिया और स्ट्रीमिंग प्लेटफॉर्म ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। हाल ही में प्रधानमंत्री मोदी ने गेमिंग विनियमन, रचनात्मक विकास और सामाजिक जागरूकता को बढ़ावा देने में गेंमिंग की भूमिका पर व्यवहारिक सम्मान दिया था।

अब हम वैज्ञानिकों द्वारा पाए गए गेमिंग के लाभ पर नज़र डालते हैं, विडियो गेम खलने के कई लाभ हाते हैं -

1. हाथ - आँख ताल-मेल में सुधारः नियंत्रक आधारित गेम आपके हाथों के लिए बहुत अच्छे होते हैं। खिलाडियों ने पाया कि उनके कार्य कि गति मे तेजी आती है और वे 37 प्रतिशत कम गलतियां करते हैं।

2. निर्णय लेने के कौशल में सुधारः खेल आपको एक बेहतर समस्या समाधानकर्ता बनना सिखा सकते है। तेज़ और अधिक सटीकता से आलोचनात्मक निर्णय लेना भी।

3. तनाव से राहत : वीडियो गेम्स तनाव को कम करते हैं, हृदय की गति को बेहतर और मन की चंचलता को रोकते हैं।

4. विस्तृत ध्यान में वृद्धिः खिलाड़ियों को अक्सर गेम्स में छोटी चीजों पर ध्यान देना पड़ता है, जिससे अन्य क्षेत्रों में ध्यान की क्षमता बढ़ती है।

5. प्रेरणा और संलग्नताः गेम्स की इंटरैक्टिव प्रकृति खिलाड़ियों को व्यस्त और प्रेरित रख सकती है, जो विशेष रूप से शिक्षा में उपयोगी है।

6. मनोरंजन और आनंदः अंततः गेमिंग मनोरंजन का एक स्रोत है। गेमिंग न केवल हमें रोमांच और मस्ती देता है, हमें नई-नई दुनियाओं की सैर भी कराता है, जो दैनिक जीवन में आंनद प्रदान करता है।

लेकिन अगर नियमित रुप से ध्यान न रखा जाए तो इनके नुकसान भी बहुत हैं। जैसे

1. गेमिंग की लतः अत्यधिक गेमिंग से लत लग सकती है, जिससे दैनिक जिम्मेदारियां और जीवन के अंतरसंबंधों में तनाव अथवा शैक्षिक या कैरियर के अवसरों में नुकसान भी हो सकता है ।

2. शारीरिक स्वास्थ्य समस्याएँ: लंबे समय तक गेमिंग करने से आखों में तनाव, खराब मुद्रा और मोटापा का कारण भी बन सकती है।

3. नींद की कमी: देर रात तक गेमिंग सत्र से नींद के पैटर्न में व्यवधान आ सकता है, जिससे नींद की कमी और संबंधित स्वास्थ्य समस्यांए हो सकती हैं।

4. अन्य रुचियों की उपेक्षाः गेमिंग पर अधिक ध्यान केंद्रित करने से अन्य शौक, रुचियों और गतिविधियों की उपेक्षा हो सकती है जा एक समग्र जीवन में योगदान करतें हैं।

5. वित्तीय लागतें: गेम, कंसोल और इन-गेम खरीदारी करने की लागत बढ़ सकती है, जिससे महत्वपूर्ण खर्च हो सकते हैं।

6. आक्रामक व्यवहार: यह चिंता है कि हिंसक वीडियो गेम्स के संपर्क में आने से आक्रामकता में वृद्धि हो सकती है या हिंसा के प्रति असंवेदनशीलता हो सकती है।

लेकिन समय का सदुपयोग और अंतिम निर्णय सदैव हमारे हाथों में होता है। जब इसे अन्य गतिविधियों और जिम्मेदारियों के साथ संतुलित किया जाता है, तो गेमिंग जीवन का एक सकारात्मक और सुखद हिस्सा हो सकता है।

जैसे-जैसे गेमिंग विकसित हो रही है, भारतीय संस्कृति, अर्थव्यवस्था और समाज पर इसका प्रभाव बढ़ने की संभावना है, जिससे यह देश के डिजिटल जगत का एक अभिन्न अंग बन सकता है।

गेमिंग सिर्फ एक मनोरंजन ही नहीं है, बल्कि यह एक समुदाय और मानवीय रचनात्मकता का प्रदर्शन भी है। चाहे आप कभी-कभार खेले या जुनून से, गेमिंग में हर किसी के लिए कुछ न कुछ है।

पहली बारिश का स्वागत

आकाश अग्रवाल
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा वायु सेना,
नई दिल्ली

नीले आकाश में छाई है बदली, मिट्टी की खुशबू हर दिल को बहला गई।
पत्तों पर नाचती हैं बूंदें चंचल, हरियाली में सजीवता नई ला गई।

बूंदों की फुहारें, संगीत सी मधुर, मन में जगाई हैं खुशियों की लहर।
धरती का आँचल हो गया तर-बतर, पहली बारिश ने दी नई उमंग की सिहर।

नदियाँ भी झूम उठीं, सरिता ने गाया गीत, बच्चों के चेहरे पर आई मुस्कान की रीत।
कागज की नावें फिर चलने लगीं, सपनों की दुनिया में हरियाली भरने लगी।

आँगन में नाचते मोर की तरह, मन भी मचल उठा है पहली बारिश में।
आसमान से गिरे जो मोती शीतल, धरती ने उनको हृदय से लगाया प्रेम में।

पहली बारिश का स्वागत करते हैं सभी, धूप से तपते दिल को मिली ठंडी छवि।
हर पेड़, हर पौधा, हर जीव है प्रसन्न, पहली बारिश ने दिया प्रकृति को जीवन अमूल्य।

बूँदों की झंकार में है जीवन का राग, मन मयूर भी नाच उठा, संग है अनुराग।
सुखद एहसासों की बरखा लेकर आई है, पहली बारिश की ये छवि सबके दिल में समाई है।

एक बैल की प्रार्थना

राकेश श्योकंद
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा,
रक्षा सेवाएं, नई दिल्ली

"भारत-सोने की चिड़िया" एक ऐसा वाक्यांश है जो भारत की ऐतिहासिक समृद्धि, वैभव और सांस्कृतिक धरोहर को दर्शाता है। प्राचीन समय में भारत अपनी प्रचुर प्राकृतिक संसाधनों, समृद्ध व्यापार और विज्ञान, कला और वास्तुकला में उन्नति के लिए प्रसिद्ध था। कृषि ने इस समृद्धि में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, क्योंकि भारत की उर्वर भूमि और सिंचाई प्रणालियों ने उसे आत्मनिर्भर और समृद्ध राष्ट्र बनाया था। आज विज्ञान और प्रौद्योगिकी ने भारत को नई ऊंचाइयों पर पहुंचाने में केंद्रीय स्थान प्राप्त कर लिया है। इस तथाकथित तकनीकी रूप से उन्नत कार्यों में हमने कई महत्वपूर्ण चीजों को नजरअंदाज कर दिया है। इनमें से एक महत्वपूर्ण चीज है बैल। वही बैल जिसने खेतों में किसान के कंधे से कंधा मिलाकर चलकर भारत को इस काबिल बनाया है कि वह इतनी दूर तक आ सके। आज मैं उस बैल की मन की बात आपके सामने रखना चाहूंगा।

एक किसान के घर एक गौ माता ने बछड़े को जन्म दिया। वह बछड़ा डेढ़ साल का हुआ तो उसके नथुनों में नथ डलवा दी गई। दो साल का हुआ तो गाड़ी में लगा दिया। फिर वह बैल जवान हो गया और सारी जवानी उसने खेत कमाया। उसके बाद आया बुढ़ापा - पैरों से लाचार और आंखों से कम दिखाई देने लगा। आप में से कई लोग यह नहीं जानते होंगे कि गांव देहात में जब पशु व्यापारी आते थे तो उन्हें मंडासा वाला के नाम से जाना जाता था। ऐसे ही मंडासे वाले उस गांव की बंद होती गली में जाकर आवाज लगाते हैं "किसी को अपना बैल बेचना हो तो बेच लो !" उसी गली में उस किसान का भी घर था। आवाज सुनते ही वह बाहर आया और उन्हें अपने घर में आने का निमंत्रण दिया। उसने अपने बैल को दिखाया और उसके मोल भाव करने की बात की। व्यापारियों ने कहा कि इसका मोल भाव बाद में करेंगे पहले इससे चलवाकर दिखाओ। जैसे ही किसान ने नीचे झुक कर बैल को खूंटे से खोलने के लिए रस्सी पकड़ी तो उसके हाथ पर एक बूंद गिरी। किसान ने ऊपर नजर उठा कर देखी तो उसका बूढ़ा बैल फूट फूट कर रो रहा था। उसकी आँखों से बहते आँसू उसके गहरे दर्द और व्यथा की मूक गवाही दे रहे थे। उन आंसुओं में एक प्रार्थना थी - ऐ मेरे मालिक अब मेरे पैर थक गए और न ही इस शरीर में कोई ताकत बची है। अब मेरे साथ ऐसा व्यवहार मत कर :-

आया ये कड़वा बुढ़ापा।
तू मत ना बेच किसान मुझे।
इस कांधे में दम ना बचा, मत ना कर परेशान मुझे।
आया ये कड़वा बुढ़ापा मत ना बेच किसान मुझे।

डेढ़ साल का बच्चा था जब नाथ सरोंध कराया था।
उम्र दो वर्ष थी मेरी जब गाड़ी में तूने लगाया था।
हल जोड़ा, गाड़ी खींची और कोहलू तेरा चलाया था।
आया कर दिया गौ माता ने जितना दूध पिलाया था।

तेरा कमा-कमा के घर भर दिया।
तेरी ऊंची रखी हमेशा शान मैंने।
आया ये कड़वा बुढ़ापा।
तू मत ना बेच किसान मुझे।

ऐ मेरे मालिक !
चाहे तूने ठंड में या जेष्ठ माह की दोपहर में हल को जोड़ा।
तेरे साथ ठंड में ठिठुरता और साथ धूप में जलता था।
और तेरी हल की फाली कोई ऊपर-ऊपर नहीं चलती थी।
उस गहरी फ़ाली को ले कर किस जोश से तेरे आगे आगे चलता था - कभी सांटी उठाने का मौका नहीं दिया।
ना कभी कोई शिकवा करी - ये कंधा खूब जला करता।
जो बीज मैंने बोया वो सौ गुना फला करता।
सरसों, गेंहू, ज्वार, बाजरा और बोई इंख और धान मैंने।
आया ये कड़वा बुढ़ापा।
तू मत ना बेच किसान मुझे।

ध्यान लगाकर सुन अन्नदाता।
मेरी बात में कोई झूठ नहीं।
सारी जवानी खेत कमाया, हुआ कभी डामाडोल नहीं।
आया बुढ़ापा बेचने लगा - कौड़ी का मेरा मोल नहीं।
तुझे सारा दर्द सुना दूंगा चाहे मेरे मुंह में बोल नहीं।

आया ये कड़वा बुढ़ापा।
तू मत ना बेच किसान मुझे।

ए मालिक आज तक तेरे लिए बस कमाया हूं, कभी कुछ मांगा नहीं।

अब मुझे लग गया है कि मेरा अंत समय नजदीक है। आपसे एक भीख मांगता हूं।
अगर आपने मुझे भीख दे दी तो मेरी तो मुक्ति है ही, स्वर्ग में आपका भी सांझा होगा।
मैं तेरे ही ठान में पैर पसारूं यह भिक्षा दे जजमान मुझे।
आया ये कड़वा बुढ़ापा।
तू मत ना बेच किसान मुझे।

ऐ मेरे मालिक।
इन व्यापारियों का यह नहीं पता कि यह कौन है और मेरे साथ कैसा व्यवहार करेंगे।
हो सकता है मुझे हत्थे पर ले जाकर मेरी गर्दन पर आरा रख दें।
इससे मेरी जननी माता की कोख की लानत तो है ही - इसका पाप आपको और समस्त समाज को भी लगेगा।

ऐ मेरे मालिक।
अब तेरी मर्जी, दे दिया भतेरा ज्ञान मैंने।
आया ये कड़वा बुढ़ापा।
तू मत ना बेच किसान मुझे।

विज्ञान और तकनीकी के युग के आने से पहले हर देशवासी इन बैलों को अपना भाई माना करता था। एक बछड़े के जन्म पर जश्न मनाया जाता था और मृत्यु पर शौक। जिस प्रकार दो भाइयों का माँ पर बराबर का हक़ होता है उसी प्रकार गाय के दूध पर भी मनुष्य और बैल का आधा आधा हक़ होता था। इसी लिए तो गौ को माता का दर्जा दिया गया है। ऐसे न जाने कितने ही बैलों ने अपने देश को पतन की कगार से वापिस लाने में सहायता की है। पंडित लाल बहादुर शास्त्री जी ने 1964 के खाद्य संकट के दौरान प्रधानमंत्री आवास में अपने बैलों के साथ हल चला कर फसल बोई और देशवासीयों से अपील की कि वो सप्ताह में एक दिन का उपवास रखें और खेती में बढ़ कर योगदान दें। उस समय भी किसानों ने खुद तो उपवास रखा लेकिन अपने बैलों को भूखा नहीं रहने दिया। प्रधान मंत्री और किसान ने बैलों के कांधे के बल पर पूर्ण भरोसा किया। बैलों ने नाराज़ भी नहीं किया। यू एस ए के खाद्य आयात पर निर्भरता खतम हुई और देश आत्मनिर्भर हुआ। इसके पश्चात भी हरित क्रान्ति में बैलों ने अपना योगदान दिया। कृषि क्षेत्र से प्राप्त आय का उपयोग देश में द्वितीयक और तृतीयक क्षेत्र के विकास में किया गया। आज हम सब जानते हैं कि भारत देश विश्वगुरु बनने की और अग्रसर है। इसमे एक छोटा लेकिन महत्वपूर्ण योगदान इन बैलों का भी है।

यह कहते हुए मुझे पीड़ा होती है कि आज इन बैलों की दशा बहुत दयनीय है। वो बैल जो हमारे लिए बोझा उठाते थे, अब खुद बोझ माने जाने लगे हैं। जब वे पैदा होते हैं, तो उन्हें उनकी माँ से छीन लिया जाता है ताकि जो दूध को वे पीने के अधिकारी हैं, वह इंसानों के उपभोग के लिए उपलब्ध हो सके। बचपन में ही सड़कों पर भूखे-प्यासे छोड़ दिए जाते हैं। अगर वे किसी तरह बड़े हो जाते हैं, तो वे अवैध तरीके से पकड़े जाते हैं और कसाईखानों में भेज दिए जाते हैं।

मनुष्य ने खेती के लिए गलत रास्ता चुना है। भारी-भरकम मशीनों से खेती करने से मृदा संकुचित हो जाती है और वायुशोधन भी कम हो जाता है। इसके ऊपर नाना प्रकार के कृत्रिम उर्वरकों के प्रयोग से जीवित मृदा जिसमे सूक्षम जीवाणु जो कृषि के लाभदायक होते हैं मर जाते हैं। इसके विपरीत बैलों से जोते जाने पर खुरों द्वारा मृदा का वायुशोधन बढ़ता है एवं उसके मल से निर्मित उर्वरक न केवल जरूरी घटक प्रदानकर्ता है साथ ही सूक्षम जीवों की संख्या में भी वृद्धि करता है। इससे एक छोटे किसान का खेती पर खर्च कम होता है और आय में वृद्धि होती है।

हमें इस बैल के द्वारा की गई प्रार्थना की सामाजिक महत्वता को समझने की भी आवश्यकता है। आज तथाकथित आधुनिक समाजों के सामाजिक मूल्यों में बड़ी ही कमी आ गई है। जिस तरह किसान ने अपने पुराने बैल को बेचने का इरादा किया था, आज देखा जा सकता है कि लोग अपने बूढ़े माता-पिता को वृद्धाश्रम में भेज देते हैं बजाय उनकी देखभाल करने के। जैसे किसान अपने बैल की मेहनत को भूल जाता है और भूल जाता है कि उसने ही उसके परिवार को पोषण दिया था। उसी प्रकार इंसान भी भूल जाते हैं उन सभी मेहनतों को जो उनके माता-पिता ने उनको पालने के लिए की थी।

अतः अंत में मेरी आप सब से एक ही प्रार्थना है – आपका जन्म उस देश में हुआ है जहां आज भी दिन की पहली रोटी गौ के लिए बनाई जाती है। आप यह समझिए कि इसका कारण ये है कि इसने और इसके वंश ने ही हमारा लालन-पोषण किया है। कभी राह में चलते गौवंश को मारे ना। अपने सामर्थ्यानुसार गौशाला में या आवारा गौवंश को भोजन कराएं। अपने आस पास के छोटे किसानों को समझाएँ कि महंगी मशीनों को छोड़ बैल को वापिस अपने घर लाएँ। मुझे पूर्ण विश्वास है कि भविष्य में जब कृत्रिम उर्वरकों के घात से जन-जन अवगत होगा तब बैल का कांधा हल को उठाएगा और देश को बीमारियों के अंधकार से बचा कर देश को नई बुलंदियों की ओर ले जाएगा।

युद्ध व मानवता

अनुराग प्रताप सिंह
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा,
रक्षा सेवाएं, नई दिल्ली

युद्ध सामान्यतः एक बुराई है। यह समस्याओं का हल ढूँढने का माध्यम ना होकर उन्हें और अधिक जटिल बनाता है। युद्ध दोनो पक्षों पर विध्वंसकारी प्रभाव छोड़ता है जो विशेषत: उन राष्ट्रों की महिलाओं व बच्चों पर गंभीर रुप से दृष्टिगोचर होता है। हर परिस्थिति में मानवता को सर्वोपरी रखते हुए बातचीत के माध्यम से शान्ति स्थापना के प्रयासों पर बल दिया जाना चाहिए। यदि पिछले कुछ वर्षों के उदाहरण देखें, चाहे रुस-युक्रेन युद्ध हो या इजराईल-फिलस्तीन संघर्ष, एक दूसरे पर हुए आक्रमण की भयावहता ने बड़े स्तर पर मानवता को शर्म-सार किया है। अधिकांश ताकतवर राष्ट्रों के मनमानी पूर्ण व एकतरफा रवैये ने अंतराष्ट्रीय संबंधो में नैतिकता के सिद्धांत को दरकिनार किया है। ये राष्ट्र अंतराष्ट्रीय नैतिकता के यथार्थवादी दृष्टिकोण पर बल देते हुए प्रतीत हुए हैं, जिसके तहत संबंधों में नैतिकता न होकर प्रत्येक राष्ट्र अपने-अपने सामाजिक-आर्थिक-राजनैतिक भौगोलिक व पर्यावरणीय हितों को प्राथमिकता देता है व उसकी पूर्ति के लिए कठोर कदम उठाने से पीछे नहीं हटता है। फिलिस्तीन के आंतकवादी समूह हमास के द्वारा इजराईल पर निर्मम बमबारी में हुई अपार जनहानि ने युद्ध की भयावता को हमारे समक्ष चिंतन के रुप में प्रस्तुत किया है। युद्ध में घायल हुए खून से लथपथ बेजुबानों ने ना सिर्फ मानवता को शर्मसार किया, बल्कि हमारी वर्तमान व्यवस्था के मुँह पर जोरदार तमाचा मारा है, जो अपनी प्रकृति के कारण भावी युद्धों को रोकने में असफल रही है। शाँति स्थापना के प्रयासों के लिए स्थापित संसाधनों तथा संयुक्त राष्ट्र, मानव अधिकार आयोग आदि की संरचनात्मक व सगंठनात्मक विषमताओँ ने इनकी वर्तमान समय में प्रासंगिकता पर प्रश्नचिन्ह खड़े किए हैं। वर्ष 1918 में प्रथम विश्व युद्ध की समाप्ति के बाद 1919 में संभावित युद्धों को रोकने के लिए लीग ऑफ नेशन्स की स्थापना की गई, किंतु वैश्विक सौहार्द्र की स्थापना के सारे प्रयास तब धराशायी हो गए जब 6 वर्षों तक चलने वाले द्वितीय विश्व युद्ध में हुई अपार जनहानि ने संपूर्ण विश्व के समक्ष अस्तित्व का संकट खड़ा कर दिया। द्वितीय विश्व युद्ध की समाप्ति के पश्चात लीग ऑफ नेशन्स की कमियों को दूर करके वर्ष 1945 में संयुक्त राष्ट्र की स्थापना की गई। विश्वयुद्ध में विजित सशक्त राष्ट्रों को इसका सदस्य बना दिया। किंतु द्वितीय विश्व युद्ध के बाद भी समय-समय पर हुए युद्धों ने हमें संयुक्त राष्ट्र के अनौचित्य से अवगत कराया है। 1950 के

आरंभ में शुरू हुआ कोरियन युद्ध तीन वर्षों के लंबे अंतराल के बाद 1953 में समझौता हो कर समाप्त हुआ। युद्ध में अमेरिका, दक्षिण कोरिया के पक्ष में जबकि सोवियत संघ, उत्तर कोरिया के साथ खड़ा दिखा, जिससे व्यापक स्तर पर जानमाल की हानि हुई। कोरियन युद्ध के समाप्त होने के दो वर्षों के बाद 1955 में वियतनाम युद्ध आरंभ हुआ जो 1975 में समाप्त हुआ। इस बीच इजरायल व अरब देशों के बीच कई युद्ध हुए, जिनमें लाखों निर्दोषों की जान गई। अमेरिका व सोवियत संघ के बीच चलने वाला शीत युद्ध 1992 में सोवियत संघ के कई राज्यों में विभाजित होने के रूप में परिणित हुआ, जिसने वैचारिक व व्यापारिक प्रतियोगिता में व्यापक हानि पहुंचाई। गौरतलब है कि जो ताकतवर राष्ट्र किसी न किसी रूप में कमजोर राष्ट्रों के बीच युद्ध कराकर उनके शोषण के जिम्मेदार थे, उन्हें संयुक्त राष्ट्र का स्थायी सदस्य बनाकर निर्णय की मुख्य प्रक्रिया में सम्मिलित कर लिया गया। यदि भविष्य में इन विध्वंसकारी युद्धों को रोकना है तो अंतरराष्ट्रीय नैतिकता का अनुपालन करते हुए संयुक्त राष्ट्र के भीतर कुछ संगठनात्मक व सुधारात्मक परिवर्तन करने चाहिए। जहाँ एक ओर यूरोप जैसे महाद्वीप का अति प्रतिनिधित्व है, वहीं दूसरी ओर एशिया व अफ्रीका महाद्वीप का उचित प्रतिनिधित्व नहीं है। अत: इसके सदस्यों की संख्या बढ़ाकर क्षेत्रगत विषमता को दूर करना चाहिए। साथ ही वीटो व्यवस्था को समाप्त करके लोकतांत्रिक प्रक्रिया के तहत निर्णय बहुमत के आधार पर लिया जाना चाहिए। वीटो व्यवस्था ने ही इसे अमानवीय कृत्यों को दंडित करने हेतु ठोस कार्रवाई करने के प्रति शक्तिहीन बना दिया है। साथ ही अन्य राष्ट्रों को युद्ध में शामिल अपराधी राष्ट्रों के प्रति आर्थिक प्रतिबंध लगाकर हतोत्साहित कर के भावी युद्धों को रोकने का प्रयास करना चाहिए।

गौर से देखें तो प्राकृतिक न्याय यह कहता है कि भले ही 100 अपराधी छूट जाएं लेकिन एक भी निरपराधी को सजा नहीं मिलनी चाहिए तो युद्ध के नाम पर करोड़ों निरपराधियों को सजा क्यों मिले इस पर हमें मिलकर विचार करना चाहिए।

नया साल, सेवानिवृत्ति, योग दिवस, खेल

ARMED FORCES TRANSFUSION CENTRE, DELHI CANTT-110010
Donate Blood, if you satisfy all of the following conditions
RAKTDAAN

गाँव का अल्हड़ सा लड़का

विशाल शर्मा
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी,
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा,
रक्षा सेवाएं, नई दिल्ली

शहर को आता है,
परिपक्व बनने की उस
अनकही प्रतियोगिता में,
अपने बचपन को
कहीं छोड़ आता है।
वो जो न रुकता था अपने घर
एक पल भी,
अब घर जाने को
उसका भी दिल चाहता है।

वो जो करता था
पकवान की फरमाइशें,
उसके खाने का
कहाँ ठिकाना अब रहता है,
"सब ठीक ही तो है"
ये झूठ कई बार वो कहता है।
वो गाँव की खामोशी में पला,
शहर के शोर में
कहीं खो सा जाता है,
अब घर जाने को
उसका भी दिल चाहता है।

वो गाँव
कुछ सरल सा था,
यह शहर
प्रौढ़ होने का ढोंग रचाता है।
अब फिर वही बारिश के
बहते पानी में
कागज की नाव बनाकर
चलाना चाहता है,
अब घर जाने को
उसका भी दिल चाहता है।

गांव के खुले आसमान की चादर,
शहर की ऊँचाइयों में
कही छुप सी जाती है।
वो शहर की अंजान राहें,
उसे कहाँ लुभाती हैं।
शहर की दौड़ती जिंदगी के बीच,
कुछ समय की शांति में
रम जाना चाहता है,
अब घर जाने को
उसका भी दिल चाहता है।

गाँव की वो चन्दन सी शाम,
शहर के चकाचौंध में
कहीं खो सी जाती है,
गज़ल सुनने वाले उस लड़के को
राजनीति की बातें
कहाँ समझ आती हैं।
मखमली गद्दों के
आराम को छोड़,
माँ की गोद में
कुछ देर का सुकून वो चाहता है,
अब घर जाने को
उसका भी दिल चाहता है।

होती अगर भगवान एक नारी

शिवहरी मीना
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी,
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा,
रक्षा सेवाएं, नई दिल्ली

होती भगवान अगर एक नारी, तो करती वो ये काम,
देती हर नारी को अधिकार, करती समाज में उसका नाम।

मिलती हर बेटी को शिक्षा, हर बहन को सम्मान,
चमकता हर माँ की आँखों में, खुशियों का जहान।

न होती कोई बेड़ियाँ, होती न कोई बंदिश,
होती हर नारी मुक्त, होता हर सपना साकार।

देती समानता का संदेश, भरती हर दिल में प्यार,
न होता कोई भेदभाव, समझती सबको एक समान।

होती हर घर में खुशी, हर गली में मुस्कान,
होती अगर भगवान एक नारी, बनाती ये समाज महान।

होती न कोई हिंसा, न होती कोई ज़ुल्म की दास्तान,
होती हर नारी सुरक्षित, होता हर पल उसका मान।

होती हर बेटी के जन्म पर खुशियों की बारात,
हर नारी की आँखों में होती सपनों की सौगात।

करती हर नारी का सम्मान, उसके हर योगदान का मान,
उसके हर कर्तव्य को देती पहचान, हर संघर्ष को सलाम।

होती हर नारी सशक्त, होता हर दिल में प्यार,
होती हर राह पर रोशनी, होता न कोई अंधकार।

होती भगवान अगर एक नारी, करती ये समाज साकार,
बढ़ाती हर नारी का सम्मान, होता हर दिल में प्यार।

मिलती हर नारी को स्वतंत्रता, होता हर मन में विश्वास,
होती हर कदम पर सफलता, हर जीवन में उजास।

करती हर नारी का उत्थान, उसका हर सपना साकार,
होती अगर भगवान एक नारी, बनाती ये समाज शानदार।

"युवापन"

कौशल कुमार
लेखापरीक्षक,
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा
(आयुध निर्माणियाँ), कोलकाता

नया है यान, यह युवापन,
ऊंची है चट्टान, यह युवापन,
अर्जुन का है बाण, यह युवापन,
कृष्ण का है ज्ञान, यह युवापन,
है एकलव्य महान, यह युवापन,
धनुष धरा है राम, यह युवापन,
राम भी है, है कलाम, यह युवापन
अवसर का है आसमान, यह युवापन,

ऊर्जा की है खान, यह युवापन,
त्रेता के सीता-राम, ये युवापन,
द्वापर के राधा-श्याम, ये युवापन,
बुद्धि भी है, है बलवान, यह युवापन,
हर भय से है अनजान, यह युवापन,
सुर है, है हर तान, यह युवापन,
हर्ष का है विज्ञान, यह युवापन,
धुन भी है, है ध्यान, यह युवापन,
सबमें है विद्यमान, यह युवापन,
फिर क्यूँ है परेशान, यह युवा-मन,
सच से शायद हैं अनजान, ये युवा-जन,

तो उठो, जागो और आगे बढ़ो,
विवेकशील बनो, विचारशील बनो, तर्कशील बनो,
स्वयं को निर्मित करो, अँधेरों में तुम दीप बनो,
अपने मन का मनजीत बनो,
गर रण हो तो रणजीत बनो,
जगजीत बनो, जीवन का संगीत बनो,
गांधी बनो, बल्लभ बनो, तुम बनो रहमान-रमण,
बनो तुम रवींद्र, रैदास, रामकृष्ण और विवेकानंद,
संसार है प्रेरित, जिनसे प्रेरित हैं हम युवा-गण,
ऊंची है उड़ान हमारी, हमसे ऊंचा जन-गण-मन।।

जिंदगी जैसी है यारो; खूबसूरत है

हरिओम कुमार
कनिष्ठ अनुवादक
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा
(आयुध निर्माणियाँ), कोलकाता

जिंदगी जैसी है यारो; खूबसूरत है,
है ख़ुशी की भी, गमों की भी जरुरत है,
ना चला है जोर जीवन में किसी भी वीर का,
वक़्त के साम्राज्य में किसकी हुकूमत है ?

बचपना, क्या बुढ़ापा, कैसी जवानी है,
तेरी-मेरी, यार सबकी, इक कहानी है,
मुस्कुराहट खिल रही थी जिन लबों पे कल तलक,
आज उन आँखों में भी खामोश पानी है,

था कही जिन आँखों में इक जगमगाता-सा दिया,
वक़्त की राहों में अब वो आँख बूढ़ी है,
जिस तरह हमको जरुरत है सहारों की कही,
उस तरह कुछ मोड़ पर ठोकर जरुरी है,

दोस्त क्या, दुश्मन हैं क्या, सब ही दीवाने हैं,
हैं कभी दुश्मन भी अपने; कभी अपने बेगाने हैं,
हैं कभी खामोश लब, कभी लब पे गाने हैं,
सबकी अपनी एक दुनियां, अपने तराने हैं,

रात की चादर तले जो चाँद भारी है,
सूर्य की दहलीज़ पे वो भी भिखारी है,
हार के, रो के किसने किस्मत संवारी है,
मुस्कुरा, गम को भुला, दुनियां तुम्हारी है,

हँस के, गा के, तुम बिता लो,जिंदगी के पल हैं जो,
मौत आने पर तो सबकी ही फजीहत है,
जिंदगी जैसी है यारो; खूबसूरत है,
है खुशी की भी गमों की भी जरुरत है...

आज के समय में सोशल मीडिया

आकाश अग्रवाल
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा वायु सेना,
नई दिल्ली

आज के समय में, सोशल मीडिया हमारे जीवन का एक अभिन्न हिस्सा बन चुका है। यह न केवल लोगों को आपस में जोड़ता है, बल्कि जानकारी, मनोरंजन और व्यापार के लिए भी एक महत्वपूर्ण साधन बन गया है। «जहाँ चाह, वहाँ राह।" इस कहावत के अनुसार, सोशल मीडिया ने हमें अपने विचारों और भावनाओं को व्यक्त करने का एक सशक्त मंच प्रदान किया है। परंतु इसके साथ ही, कई समस्याएं और चुनौतियां भी उत्पन्न हुई हैं, जिनका समाधान निकालना आवश्यक है।

सोशल मीडिया के फायदे

सोशल मीडिया ने हमारे जीवन को कई तरीकों से समृद्ध किया है:

1. संचार का सशक्त माध्यम: “संपर्क में रहने के लिए सबसे अच्छा माध्यम सोशल मीडिया है।” यह कथन आज के समय में सत्य प्रतीत होता है। सोशल मीडिया के माध्यम से हम अपने दोस्तों और परिवार के सदस्यों के साथ जुड़ सकते हैं, चाहे वे दुनिया के किसी भी कोने में हों।

2. जानकारी का भंडार: सोशल मीडिया ने हमें ताजा और नवीनतम समाचार प्राप्त करने का साधन प्रदान किया है। "जानकारी ही शक्ति है।" इस कहावत को सोशल मीडिया ने साकार कर दिखाया है।

3. व्यवसाय के लिए लाभकारी: सोशल मीडिया ने छोटे और बड़े व्यवसायों को अपने उत्पादों और सेवाओं के प्रचार-प्रसार का नया तरीका दिया है। "जो दिखता है, वो बिकता है।" यह कहावत सोशल मीडिया पर पूरी तरह से लागू होती है।

4. रचनात्मकता का मंच: सोशल मीडिया ने लोगों को अपनी रचनात्मकता और प्रतिभा को प्रदर्शित करने का अवसर प्रदान किया है। "कलाकार का काम उसकी कला बोलती है।"

सोशल मीडिया की समस्याएं

सोशल मीडिया के लाभों के साथ-साथ, इसके कई दुष्प्रभाव भी हैं:

1. गोपनीयता का अभाव: सोशल मीडिया पर व्यक्तिगत जानकारी साझा करने से गोपनीयता का अभाव हो सकता है। "गोपनीयता का महत्व समझना चाहिए।" सोशल मीडिया पर निजी जानकारी का दुरुपयोग भी हो सकता है, जिससे लोग साइबर अपराध का शिकार हो सकते हैं।

2. साइबर बुलिंग: सोशल मीडिया पर साइबर बुलिंग एक गंभीर समस्या है। "बात का बतंगड़ बनाना" – इस कहावत की तरह, सोशल मीडिया पर छोटी-छोटी बातों को बढ़ा-चढ़ाकर प्रस्तुत किया जाता है, जिससे कई बार लोगों की भावनाओं को ठेस पहुंचती है।

3. समय की बर्बादी: सोशल मीडिया पर अधिक समय बिताने से समय की बर्बादी होती है। "समय का सदुपयोग करना चाहिए।" सोशल मीडिया का अत्यधिक उपयोग मानसिक स्वास्थ्य पर भी नकारात्मक प्रभाव डाल सकता है।

4. असत्य जानकारी का प्रसार: सोशल मीडिया पर असत्य और भ्रामक जानकारी का प्रसार भी होता है, जिससे लोगों के मन में भ्रम उत्पन्न होता है। "झूठ के पैर नहीं होते।" इस कहावत को ध्यान में रखते हुए, हमें सोशल मीडिया पर प्राप्त जानकारी की सत्यता की जांच करनी चाहिए।

सोशल मीडिया का बच्चों पर प्रभाव

सोशल मीडिया का बच्चों पर गहरा प्रभाव पड़ता है, जो कई बार सकारात्मक और कई बार नकारात्मक हो सकता है:

1. शिक्षा और जानकारी: सोशल मीडिया बच्चों के लिए ज्ञान और शिक्षा का एक स्रोत बन सकता है। "शिक्षा ही सफलता की कुंजी है।" ऑनलाइन ट्यूटोरियल्स, शैक्षिक वीडियोज़ और विभिन्न ज्ञानवर्धक सामग्री बच्चों को उनके अध्ययन में मदद कर सकती है।

2. सामाजिक संपर्क: सोशल मीडिया बच्चों को उनके दोस्तों और परिवार के सदस्यों के साथ जुड़ने का अवसर प्रदान करता है। "सामाजिकता ही मानवता का आधार है।"

3. समय की बर्बादी और ध्यान की कमी: सोशल मीडिया पर अत्यधिक समय बिताने से बच्चों का ध्यान भटक सकता है और उनकी पढ़ाई पर नकारात्मक प्रभाव पड़ सकता है। "समय का सदुपयोग करना चाहिए।"

4. साइबर बुलिंग और मानसिक स्वास्थ्य: सोशल मीडिया पर साइबर बुलिंग के कारण बच्चों के मानसिक स्वास्थ्य पर नकारात्मक प्रभाव पड़ सकता है। "मन की शांति सबसे महत्वपूर्ण है।" साइबर बुलिंग से बच्चे तनाव, अवसाद और आत्मसम्मान की कमी का शिकार हो सकते हैं।

अभिभावकों की जिम्मेदारी

बच्चों को सोशल मीडिया के दुष्प्रभावों से बचाने और सही दिशा देने के लिए अभिभावकों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है:

1. मार्गदर्शन और निगरानी: अभिभावकों को बच्चों को सोशल मीडिया का सही उपयोग करने के लिए मार्गदर्शन और निगरानी करनी चाहिए। "बच्चों को सही दिशा दिखाना अभिभावकों का कर्तव्य है।"
2. समय प्रबंधन: बच्चों को सोशल मीडिया का उपयोग सीमित मात्रा में और सही उद्देश्यों के लिए करने के लिए प्रेरित करना चाहिए। "समय का सदुपयोग करना चाहिए।"
3. गोपनीयता की सुरक्षा: बच्चों को उनकी व्यक्तिगत जानकारी साझा करने से बचने के लिए शिक्षित करना चाहिए और उनकी गोपनीयता की सुरक्षा के उपायों के बारे में जानकारी देनी चाहिए।
4. साइबर बुलिंग से बचाव: बच्चों को साइबर बुलिंग के खतरों के बारे में बताना चाहिए और उन्हें इस प्रकार की घटनाओं की रिपोर्ट करने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए। "सुरक्षित रहना सबसे महत्वपूर्ण है।"

सोशल मीडिया की समस्याओं के समाधान

इन समस्याओं का समाधान निकालना आवश्यक है ताकि सोशल मीडिया का सही और सकारात्मक उपयोग किया जा सके:

1. गोपनीयता की सुरक्षा: सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स को अपने उपयोगकर्ताओं की गोपनीयता की सुरक्षा के लिए मजबूत सुरक्षा उपाय अपनाने चाहिए। उपयोगकर्ताओं को भी अपनी व्यक्तिगत जानकारी साझा करते समय सावधानी बरतनी चाहिए।
2. साइबर बुलिंग की रोकथाम: साइबर बुलिंग की रोकथाम के लिए कड़े नियम और कानून बनाए जाने चाहिए। सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स को भी इस प्रकार की गतिविधियों पर निगरानी रखनी चाहिए और तुरंत कार्रवाई करनी चाहिए।
3. समय प्रबंधन: सोशल मीडिया का सही उपयोग करने के लिए समय प्रबंधन महत्वपूर्ण है। "समय का सदुपयोग करना चाहिए।" सोशल मीडिया का उपयोग सीमित मात्रा में और सकारात्मक उद्देश्यों के लिए करना चाहिए।
4. सत्यापन की प्रक्रिया: सोशल मीडिया पर प्रसारित होने वाली जानकारी की सत्यता की जांच के लिए एक सशक्त सत्यापन प्रक्रिया होनी चाहिए। उपयोगकर्ताओं को भी जानकारी को साझा करने से पहले उसकी सत्यता की जांच करनी चाहिए।

भारत में सोशल मीडिया के लिए कानून

भारत में सोशल मीडिया के उपयोग को विनियमित करने के लिए विभिन्न कानून और नियम बनाए गए हैं:

1. सूचना प्रौद्योगिकी अधिनियम, 2000: यह अधिनियम साइबर अपराधों को रोकने और डिजिटल जानकारी की सुरक्षा के लिए बनाया गया है। इसके अंतर्गत विभिन्न प्रकार के साइबर अपराधों के लिए सजा का प्रावधान है।
2. इंटरमीडियरी गाइडलाइंस और डिजिटल मीडिया एथिक्स कोड, 2021: इस कोड के तहत, सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स को उपयोगकर्ताओं की शिकायतों का निवारण करने के लिए एक शिकायत अधिकारी नियुक्त करना

आवश्यक है। इसके अलावा, यह कोड सोशल मीडिया पर प्रसारित होने वाली सामग्री की निगरानी और नियंत्रण के लिए भी दिशा-निर्देश प्रदान करता है।

3. भारतीय दंड संहिता (IPC): सोशल मीडिया पर अफवाह फैलाने, धमकी देने, अश्लील सामग्री प्रसारित करने आदि के लिए IPC की विभिन्न धाराओं के तहत सजा का प्रावधान है।

सोशल मीडिया आज के समय का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है, जो हमारे जीवन के हर पहलू को प्रभावित कर रहा है। यह हमें जानकारी, संचार, और मनोरंजन के अनेक साधन प्रदान करता है। हालांकि, इसका सही उपयोग करके हम इसके लाभ उठा सकते हैं और इसके नुकसानों से बच सकते हैं। "हर सिक्के के दो पहलू होते हैं।" इस कहावत की तरह, सोशल मीडिया के भी दो पहलू हैं। हमें इन्हें इसका समझदारी से उपयोग करना चाहिए और इसके सकारात्मक पक्षों का अधिकतम लाभ उठाना चाहिए।

अंतिम विचार

"सोशल मीडिया एक ताकतवर उपकरण है, लेकिन इसके सही उपयोग से ही यह हमारे जीवन में सकारात्मक बदलाव ला सकता है।" इस विचार के साथ, हमें सोशल मीडिया का उपयोग विवेकपूर्ण तरीके से करना चाहिए और इसके सभी लाभों का आनंद लेना चाहिए।

सावन की बरसात

गौरव सिंह
लेखापरीक्षक
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा,
रक्षा सेवाएं, नई दिल्ली

बूंदों पर बूँदें गिर रहीं
सावन को पूरा कर रहीं।
मानो उस नीले अंबर को
फिर किसी की याद आई है
"झूमो-गाओ मौज' मनाओ
आज फिर सावन की बरसात आई है।

चारों ओर घनेरे बादल
हरियाली घनी छायी है
पेड़ों पर बैठी चिड़ियां भी
मधुर कोलाहल लाई हैं
बहुत खुश हैं मोर-मोरनी
आज फिर सावन की बरसात आई है।

सावन की ठण्डी बौछारें
मन - मोहक तन को संवारे
आच्छादित हुआ है आसमान
ठण्डी सी पवन भी आई है
कोई संदेश नया सा लाई है
आज फिर सावन की बरसात आई है।

अदृश्य शत्रु

पूनम मुंजाल
पर्यवेक्षक
कार्यालय निदेशक लेखापरीक्षा,
रक्षा सेवाएँ, दिल्ली छावनी

शत्रु यह अदृश्य है
कियो भीषण प्रहार है,
चोट गहरी दे रहा,
विश्व में हाहाकार है।
मानव का दुश्मन बना
ना रुप ना आकार है,
स्पर्श को माध्यम बना
फैला रहा संसार है।
आघात पर आघात किये,
विनाश की लीला दिखाई,
रक्त पिपासा दिल में लिए
इसने अपनी शक्ति बढ़ाई।
अब बारी मानव की है,
जिसने हार नहीं कभी मानी है,
हर युद्ध इसने जीता है,
दुश्मन भले ही अभिमानी है।
शत्रु की कमजोरी समझ,
जीत की वजह मिलेगी,
पहले खुद संभलना होगा,
तभी हमले की जगह मिलेगी,
स्पर्श को तरसे शत्रु,
तो स्पर्श नहीं हम होने देंगे,
एक से एक बढ़ाना चाहे
जो हम कभी नहीं होने देंगे।
विजय वीर बन कर हम
मानव सभ्यता को बचाएंगे,
नामो निशान मिटा कर शत्रु का
जिन्दगी फिर पटरी पर लाएंगे
जिन्दगी फिर पटरी पर लाएंगे।

सूनी-सड़कें

सत्यवीर गौरव यादव
सहायक लेखापरीक्षा
कार्यालय निदेशक लेखापरीक्षा,
रक्षा सेवाएँ मेरठ कैण्ट

कल शाम ही की तो बात है ये
अनायास में निकला उधर से
था हाल-चाल सब वैसा ही
पर सूनी सी पड़ी थीं वो सड़कें।

हर शाम हँसी-ठिठोली से
गूँजा करती थीं जो सड़कें
कोई आता था दिन भर थक कर
पढ़-लिखकर भी कोई आता था
मद्दम से हो रहे सूरज में
उस ओर खिंचा चला जाता था
दिन भर की अपनी कहानी को
हर शाम बैठ कह जाता था।

सबकी सुन, अपनी सुना के मन
कुछ मन्द मन्द लहलहाता था
हुआ भाव-विभोर ये मन मेरा
मानों पूछ रही थी वो सड़कें
अब कहाँ गये वो सब लड़के।

खेतों में थी वही हरियाली
युवा शिशिर का था आगाज हुआ
अंदर से कौंध उठा ये मन
प्रश्नों का झंझावात हुआ
क्यूँ हुआ है ये क्या वजह रही
ना नदी का पुल गुलजार हुआ
शायद ये समय की करवट है
या समय कहीं बर्बाद हुआ।

जो समय था खाली सड़कों का
वो फोन में अब बर्बाद हुआ
ना 4जी था न फोन ही था
तो प्राकृतिक आभास हुआ
इस भौतिकता के दम्भ ने ही
इन सड़कों को वीरान किया
कुछ चले गये बाहर लड़के
कुछ घिरे हैं शायद घर में ही
जिन्हें ढूँढ रहीं हैं ये सड़कें।

एक शाम उधर को जाओ तुम
सूनी सी पड़ी हैं वे सड़कें
चलो आओ किसी दिन मिलते हैं
कुछ खट्टी-मीठी यादों से कुछ पूरे-अधूरे वादों से
गुलजार करेंगे वे सड़कें
सूनी सी पड़ी हैं जो सड़कें।

प्रकृति का सौंदर्य

अभिषेक कुमार मीणा
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा,
रक्षा सेवाएं, नई दिल्ली

हरे भरे वन, शीतल पवन,
नीला आसमान, उड़ते पंछी गगन।

कलकलाते झरने, नदियों का राग,
चहचहाते पक्षी, बने मधुर अनुराग।

हर ऋतु का अपना एक अलग रंग,
देती जीवन शैली को एक नई उमंग।

पर्वतों की शिखर पर बर्फ का हार,
रंग बिरंगे फूलों में छुपा है प्रकृति का प्यार।

नदियों की धारा, पर्वतों की शान,
प्रकृति का सौंदर्य, अनुपम और महान।

बरसात के रंग

तपिश में तड़पती भूमी की आस,
शीतल बूंदें बुझाएँगी राहत की प्यास।

ठंडी हवाए छू गईं धरती की अंगडाई,
पत्तियों संग फूल, बजे जैसे शहनाई।

आसमान में रंगों का रास,
बारिश की बूंदों का मधुर अहसास।

रंगों की छटा में इंद्रधनुष खिलता,
वर्षा की बूंदों में हर दिल मिलता।

बादलों का गर्जन, बिजली का नृत्य,
बरसते हैं जब, होता है अद्भुत दृश्य।

मिट्टी हूँ मैं

राकेश श्योकंद
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा,
रक्षा सेवाएं, नई दिल्ली

ना आरंभ ना अंत, मेरे प्रकार है अनंत,
मैं जीवित भी, मैं मृत भी,
मैं सूक्ष्म भी, मैं पहाड़ भी,
मिट्टी हूँ मैं।

कभी मैं कुचली जाती पग तले,
कभी नभ में खग भी मेरे तले,
गिरती, टूटती और फिर उठती,
मिट्टी हूँ मैं।

बचपन में मेरे ही आंचल में की तूने क्रीड़ा,
वन-कटाई और खनन से क्यों देता है अब पीड़ा।
सचेत तू मुझसे है, मैं तुझसे नहीं,
मिट्टी हूँ मैं।

भोजन मैं ही देती, चाहे हो जीव या जिवाणु,
देती मैं खनिज जिससे बनते घर-घरौदें, और परमाणु,
इनसे बस तू खुशियों की धूल ही बिखेरे,
मिट्टी हूँ मैं।

ढक कंक्रीट का कपड़ा, मेरे लिए ही करता है झगड़ा,
जंगल हड़प कर दिए जीव-जन्तु बेघर,
मनुष्य क्यों तू भूल गया- हर जीव है मुझ पर निर्भर,
मिट्टी हूँ मैं।

कण-कण में मेरे लिखी है मातृ प्रेम की परिभाषा,
सारी जगत हो आंनदमय यही है मेरी अभिलाषा,
सब मुझसे बना सब मुझमें ही मिला,
मिट्टी हूँ मैं।

इस वर्ष सेवानिवृत हुए कर्मचारियों की सूची

सं.	एच.ओ.एस संख्या	नाम (श्री/ श्रीमती/ सुश्री)	पद	वर्ग	जन्मतिथि	सेवानिवृत तिथि	वर्तमान स्टेशन
1	1908	धीरेन्द्र शुक्ला	व.ले.प.अ	जनरल	28.01.1964	31.01.2024	इलाहाबाद
2	2014	विजय कुमार सांगर	व.ले.प.अ	जनरल	15.01.1964	31.01.2024	चंडीगढ़
3	2109	लखिन्द्रा हँसदा	व.ले.प.अ	एस.सी	05.01.1964	31.01.2024	पटना
4	1972	प्रशांत कुमार दास	व.ले.प.अ	जनरल	12.02.1964	28.02.2024	कोलकाता डी जी ए (ओ एफ)
5	1760	जगदीश राजन	व.ले.प.अ	एस.सी	01.03.1964	28.02.2024	मेरठ
6	2569	जय प्रकाश	व.ले.प	एस.सी	20.03.1964	31.03.2024	डीडीएडीएस, दिल्ली
7	1854	अंजना दत्ता	पर्यवेक्षक	जनरल	30.03.1964	31.03.2024	डीडीएडीएस, दिल्ली
8	1800	जी नरेश कुमार	व.ले.प.अ	जनरल	16.03.1964	31.03.2024	चेन्नई
9	1933	विजय कुमार	स.ले.प.अ	जनरल	10.04.1964	30.04.2024	जम्मू
10	2404	के.परमशिवम	सहायक पर्यवेक्षक	एस.सी	28.04.1964	30.04.2024	चेन्नई
11	2032	साहेब सिंह	व.ले.प.अ	एस.सी	01.04.1964	30.04.2024	डी जी ए (एन) दिल्ली
12	2211	गुलाब चंद्र	सहायक पर्यवेक्षक	एस.सी	20.05.1964	31.05.2024	इलाहाबाद
13	1989	एस.के श्रीधर	व.ले.प.अ	जनरल	07.05.1964	31.05.2024	आवड़ी
14	2039	हर्ष कुमार पांडे	व.ले.प.अ	जनरल	29.05.1964	31.05.2024	सी एण्ड एजी दिल्ली
15	2618	के. ए. गभाले	एम.टी.एस	एस.टी	01.06.1964	30.06.2024	पुणे
16	1790	एस.एस.नफाडे	पर्यवेक्षक	जनरल	22.06.1964	30.06.2024	पुणे
17	1901	पी.मुरली	व.ले.प.अ	एस.सी	27.06.1964	30.06.2024	बैंगलोर
18	2169	सुनिता मिश्रा	सहायक पर्यवेक्षक	जनरल	22.06.1964	30.06.2024	देहरादून
19	1841	रामफल	व.ले.प.अ	जनरल	08.07.1964	31.07.2024	पीडीए(ए एफ) दिल्ली
20	1782	नंद किशोर आर गायकवाड़	पर्यवेक्षक	एस.सी	09.07.1964	31.07.2024	पुणे
21	2000	जी.आर.राव	व.ले.प.अ	जनरल	28.08.1964	31.08.2024	पीडीए पुणे
22	2507	किरनजीत कौर	व.ले.प.अ	जनरल	21.08.1964	31.08.2024	डीजीएडीएस दिल्ली
23	2549	तपन कुमार बनर्जी	व.ले.प	जनरल	23.09.1964	30.09.2024	जबलपुर
24	2009	राहुल कुमार गुप्ता	व.ले.प.अ	जनरल	29.09.1964	30.09.2024	सी एण्ड एजी दिल्ली
25	2070	विल्सन सी. एंटनी	व.ले.प.अ	जनरल	25.09.1964	30.09.2024	पुणें
26	2105	शिव चरण	व.ले.प.अ	एस.सी	01.10.1964	31.10.2024	इलाहाबाद
27	2182	कंवलजीत भारती	व.ले.प.अ	एस.सी	08.09.1964	30.09.2024	जम्मू
28	2008	के. सरुमथी	पर्यवेक्षक	जनरल	30.09.1964	30.09.2024	चेन्नई
29	1929	राजेन्द्र कालुराम जगताप	पर्यवेक्षक	जनरल	07.10.1964	31.10.2024	किरकी
30	2552	हरपाल	व.ले.प.अ	जनरल	02.10.1964	31.10.2024	डीजीएडीएस, दिल्ली
31	2546	रविन्द्र सिंह बिष्ट	सहायक पर्यवेक्षक	जनरल	07.11.1964	30.11.2024	डीजीएडीएस, दिल्ली
32	2584	दीपक कुमार दास	व.ले.प	जनरल	31.12.1964	31.12.2024	कोलकाता
33	2010	जसपाल सिंह गब्र्याल	पर्यवेक्षक	एस.टी	01.1.1965	31.12.2024	मेरठ

राजभाषा नीति संबंधी प्रमुख निदेश

राजभाषा अधिनियम 1963 की धारा 3(3) के अंतर्गत संकल्प, सामान्य आदेश, नियम, अधिसूचनाएँ, प्रशासनिक व अन्य रिपोर्टें, प्रेस विज्ञप्तियां, संसद के किसी सदन या दोनों सदनों के समक्ष रखी जाने वाली प्रशासनिक तथा अन्य रिपोर्टें, सरकारी कागज़ात, संविदा, करार, अनुज्ञप्ति, अनुज्ञा पत्र, निविदा सूचनाएँ और निविदा प्रपत्र द्विभाषिक रूप में, अंग्रेजी और हिंदी दोनों जारी किए जाएं।

कार्यालय में मूल पत्राचार हिंदी में ही किया जाए।

हिंदी में प्राप्त पत्रों के उत्तर केवल हिंदी में दिए जाएं।

केन्द्र सरकार के सभी कार्यालयों में हिंदी टंकण करने वाले कर्मचारियों एवं आशुलिपिकों को हिंदी टाइपिंग प्रशिक्षण हेतु नामित किया जाए।

कार्यालय में प्रतिदिन किए जाने वाले कार्यों में हिंदी टिप्पणी लेखन को प्रोत्साहित किया जाए।

कार्यालय के सभी कंप्यूटरों पर हिंदी के प्रयोग के लिए केवल यूनिकोड एनकोडिंग का प्रयोग किया जाए।

अनुवाद कार्य तथा राजभाषा नीति के कार्यान्वयन से जुड़े सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को केन्द्रीय अनुवाद प्रशिक्षण हेतु नामित किया जाए।

कार्यालय में हिंदी के प्रयोग को अधिक बढ़ावा देने के दिए सरकारी कामकाज में हिंदी को अधिक से अधिक प्रयोग किया जाए।

संपादक मंडल का रचनाकारों के विचारों से सहमत होना आवश्यक नहीं है। रचनाकारों के विचार उनके निजी विचार होते हैं एवं विचारों/लेखन की मौलिकता संबंधी ज़िम्मेदारी स्वयं रचनाकार की है।

कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा, रक्षा सेवाएँ,
नई दिल्ली

कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा, रक्षा सेवाएँ,
नई दिल्ली
'हिंदी पखवाड़ा 2023'

कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा, रक्षा सेवाएँ,
नई दिल्ली
'हिंदी पखवाड़ा 2023'
दिनांक 14 सितंबर 2023 से 29 सितंबर 2023 तक

नई दिल्ली

कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा, रक्षा सेवाएँ,
नई दिल्ली
'हिंदी पखवाड़ा 2023'

प्रकाशकः

कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा रक्षा सेवाएं,

7वां तल, ए ब्लॉक, अफ्रीका एवेन्यू, सरोजिनी नगर, दिल्ली–110023